मार्च २०१२
वर्ष २, अंक १७
मूल्य ₹ २०

माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)
द्वारा प्रकाशित

हिन्दी

Reg. No. MAHHIN08046/13/1/2010-TC

मासिक पत्रिका

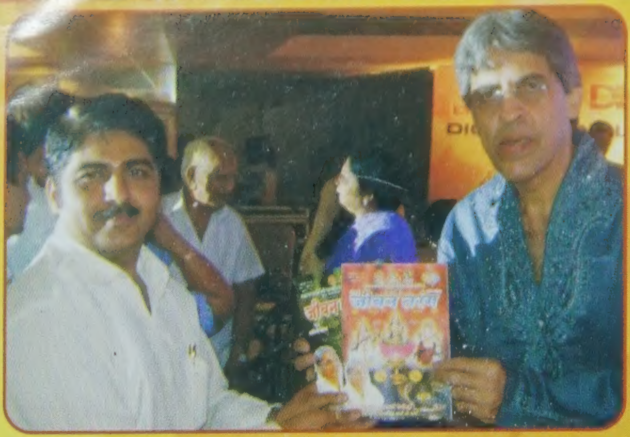
जीवन तरंग



! जय झुलेलाल !

ब्रह्मलीन माता रुकमणी देवी जी

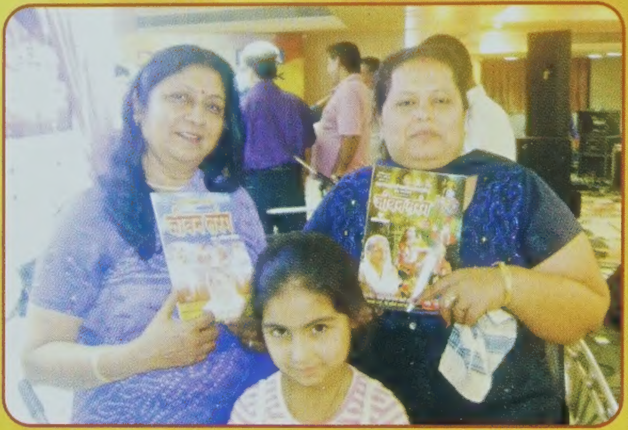
पहरीं सबजो भलो, तेंह सदकि असाँ जो भलो....



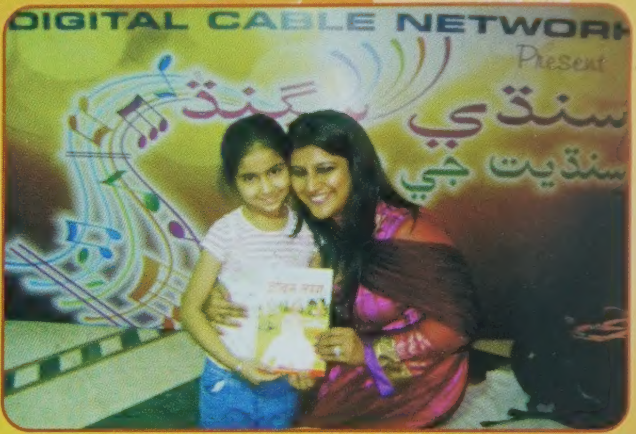
संगीत सम्राट श्री घनशाम वासवानी जी
के संग " जीवन तरंग "



माता के जागरनो के सरताज श्री नरेंद्र चंचलजी
कर रहें है " जीवन तरंग " पर नाज



गायिका श्रीमती मीनाक्षी घनशाम वासवानी नी जी
हीर व करिश्मा रोहरा के संग



गायिका कुमारी शिल्पा वासवाणी जी " जीवन तरंग "
के करिश्मा रोहरा के संग



ब्रह्मकुमारीज आश्रम की अध्यक्षा सोम दीदी
" जीवन तरंग "के संग



" जीवन तरंग "पुष्पा दीदी के संग



झूलण भक्त भाऊ लीलारामजी
" जीवन तरंग "के संग



महाराज राजेश जी एवं भाटीया परिवार करा रहे
है " जीवन तरंग "का दीदार

जीवन तरंग

हिंदी भाषा में प्रकाशित **मासिक पत्रिका**

वर्ष : 2 अंक : 17

भाषा : हिंदी मूल्य : 20 रुपये

मार्च 2012

Reg No. MAHHINO8046/13/1/2010-TC

स्वामी:माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)

प्रकाशक और मुद्रक : श्री. मेघराजमल डी. रोहरा

प्रकाशन स्थल : माता रुकमणी पॅलेस,बै.नं.255, रु.नं.1, झुलेलाल मंदिर के पिछे, उल्हासनगर - 421001. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)

मुद्रण स्थल : साईंकृपा प्रिन्टर्स, मथुरा निवास, गणेश नगर, ओटी सेक्शन, उल्हासनगर-421004. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)

संपादक: श्री. दिपक एम. रोहरा.

सदस्य शुल्क (डाक खर्चसहित)

वार्षिक : रुपये 200/- पंचवार्षिक: रुपये 1000/-

आजीवन : रुपये 2500/-

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशी रजिस्ट्रर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशी गुम होने पर संस्था की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशी मनिऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट (जीवन तरंग के नाम) भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : माता रुकमणी पॅलेस, बै.नं.255, रु.नं.1, झुलेलाल मंदिर के पिछे, उल्हासनगर-421001. जिला ठाणे (महाराष्ट्र)

फोन नं.: (0251) 2712291

मो नं.: 09403940007, 09320205766

Email : jeevantarang_unr@rediffmail.com

jeevantarang_unr@yahoo.in

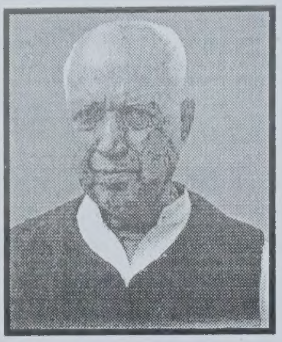
deepakrohra.m@gmail.com

इस अंक में पढ़िये

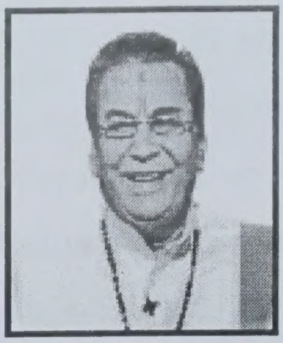
नोट : अगर आप "जीवन तरंग" मासिक पत्रिका से जुड़ना चाहते हैं तो, पृष्ठ क्र. ३८ पर दिये हुए सदस्यता फॉर्म भरकर भेजे या एस.एम.एस करें।

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

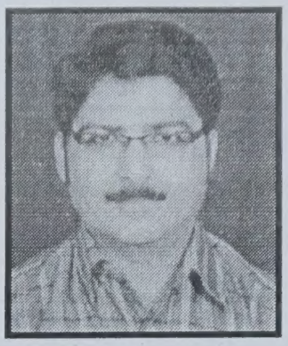
संपादकीय कार्यकारिणी मंडल



श्री. मेंघराज डी. रोहरा
प्रकाशक/मुद्रक



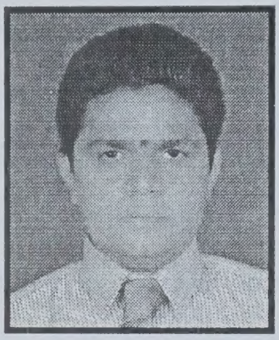
आचार्य आर्य गुरुजी
संरक्षक



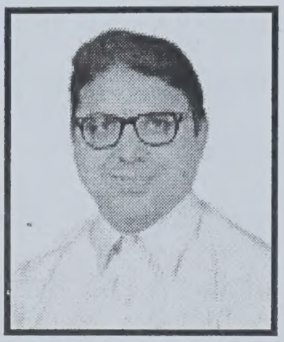
श्री. दिपक एम. रोहरा
प्रधान संपादक



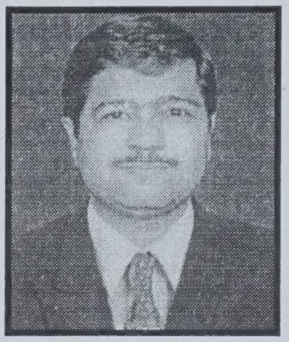
श्री. अनुराग आचार्य
सह संपादक



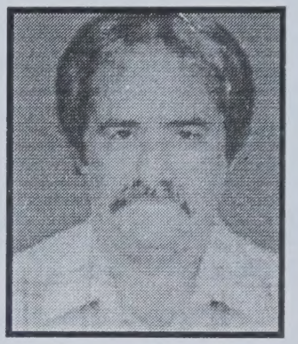
श्री. अविनाश (ओम) वलेचा
संवाददाता



ॲड. नरेश एम. रोहरा
कानूनी सलाहकार



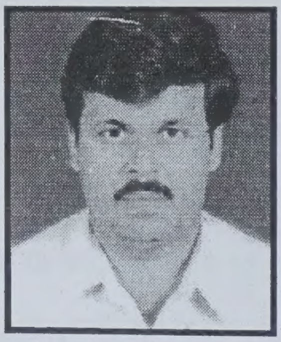
श्री. रामचंद भाटिया
संरक्षक



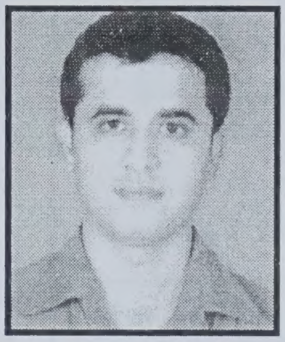
श्री. लखी वलेचा
छायाचित्र संकलन



श्री. विजय रहाणे
अंबरनाथ संवाददाता



श्री. परमानंद गरेजा
संवाददाता



श्री. सुनील (सोनू) विशनानी
मार्केटिंग एडवाईजर



श्री. गोप पंजाबी
संवाददाता



श्री. कालूराम कुकरेजा
कोटा (राजस्थान)



श्री. महेंद्र (राजू) वाधवानी
अहमदाबाद संवाददाता

"ज्ञान की बातें"



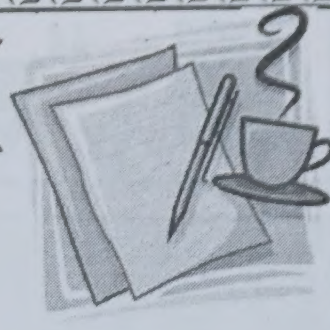
पहरीं सबजो भलो , तेंह सदिक असाँ जो भलो...

हमारे जीवन काल में हर नई चीज सीखने को मिलती है। जैसे विध्यार्थी अपने शिक्षक से लिखना-पढ़ना सीखकर काबिल सफल बनते हैं, ऐसे ही हर क्षेत्र में किसी से कुछ न कुछ सीखकर हर आदमी अपने-अपने अनुसार महान बनता है। हमें प्रकृती द्वारा की बनाई हर एक चीज से नई सीख मिलती है। उनमें से एक इस प्रकार है। कृष्ण भगवान एक बार अपने सखा बलराम के साथ गाय चराने जा रहे थे। गृीष्मकाल की ऋतु में तेज धूप थी. लेकिन रास्ते के दोनों तरफ जो पेड़ लगे हुए थे । उनकी छाया की वजह से उन्हें गर्मी महसूस नहीं हो रही थी. यह देख भगवान श्री कृष्ण ने बलरामजी से कहा, "ये पेड़ कैसे भाग्यवान हैं। वे केवल दुसरों के भले के लिए जीते हैं। वे धूप, हवा, बरसात, बरफ, सब का सामना करते हुए हमें बचाते हैं और सुरक्षित रखते हैं। और बदले में अपने लिए कुछ भी नहीं मांगते. तो इसी प्रकार हमारा जीवन भी सही मायनों में जीने लायक तभी होगा जब हम दुसरे के दुख दर्द को समझकर उसमे शरीक होंगे" "जैसा हम देते हैं, वैसा ही पाते हैं।" दूसरों से पाने के मुकाबले दुसरों को देना ही सबसे बड़ी बरकत है. जैसे बीज को बोते समय जब हम उन्हें नितनियम पानी, खाद, व जरुरी चीजें देंगे तभी तो वह छोटा बीज पेड़ बनकर हमें फल देगा व छांव देगा. तो इसी प्रकार छोटी से छोटी हर चीज से हमें कुछ न कुछ सीखने को मिलता है ।

माताजी यह भी बताती थीं की उन्हीं पेडों की तरह अगर हम अपने जीवन में कुछ सिख लें जैसे हमारे आसपास रहने वाले किसी गरीब जरुरतमंद को अन्नदान दें या कपडे देकर उसका तन ढकें । या किसी गरीब की बिटिया की शादी में कुछ मदत करें या आसपडोस के जरुरतमंद बच्चो के पढाई के लिए फीस भरने का संकल्प लें । या अपने कमाई के मात्र 10% हिस्से को पशुपक्षियों में सेवा के लिए बुंदी, सेव, या गौ माता के घास के लिए रखें तो न सिर्फ हमारे मन को शांती मिलती है बल्कि हम पुण्य के भागी भी बनते है व जिससे प्रकृति हमें सभी विपदाओं से बचाती है । और इसी अमूल्य जीवन में किसी के काम आकर अपना मनुष्य जीवन सफल बना सकते है । इसलिए माताजी हमेशा कहती थी

पहरींसबजोभलो, तेंहसदिकअसाँजोभलो..

संपादकीय...

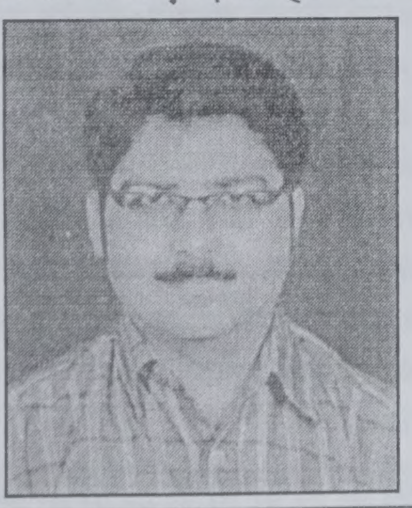




आदरणीय पाठकगण,
सप्रेम नमस्कार !

मार्च का यह महीना मानो संपूर्ण सिंधी संप्रदाय,संपूर्ण मानवजाति के लिये प्रेम, भाईचारा, दया, क्षमा, शांति का पैगाम लेकर आ रहा है। चेटीचंड और गुढ़ीपाडवा यानि हिंदु-नववर्ष का प्रारंभ इसी माह की २३ तारीख से हो जायेगा। अभी-अभी पिछले माह की तरफ देखता हूं तो हमारे अपने शहर उ़ल्हासनगर के महानगरपालिका चुनाव मेरी आँखों के आगे घूम जाते हैं। दिन-भर चुनावी घोषणायें, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के विभिन्न उम्मीदवार और शहर की जनता! चुनावी घमासान के बाद शांति, उल्हास, उमंग और आपसी एकता का पैगाम लेकर आया है, चेटीचंड पर्व अपने आप में जिंदगी में संपूर्णता को प्राप्त करने का पर्व हैं । चेटीचंड पर्व अपने खुद के अंदर के अंधकार को दूर करके अपने मन में प्रकाश स्थापित करने का पर्व है । इसी दिन हमारे शहर उल्हासनगर में सिंधी संप्रदाय द्वारा एशिया की सबसे बड़ी भगवान झूलेलाल की महायात्रा निकाली जाती है। इस महायात्रा में उल्हासनगर शहर समेत पूरे हिंदुस्तान से संत, साधू महात्माओं का आगमन होता है। उसी दिन शहर भर में हेलीकॉप्टर से भक्तों के ऊपर फूलों की वर्षा की जाती है। यह हमारे शहर का भाग्य है कि इस चेटीचंड महायात्रा के अवसर पर उल्हासनगर शहर में संतश्रेष्ठ, सदगुरु, परमपूज्यनीय साईं आसारामजी बापू पधार रहे हैं। भाग्य की बात यह है कि बापू दो दिन उल्हासनगर शहर में रुकेंगे। तारीख २३ मार्च के दिन सी. ब्लॉक, डॉल्फिन क्लब के पास वाले मैदान में सुबह नौ बजे और दोपहर तीन बजे प्रवचनों की अमृतवर्षा करेंगे। २४ मार्च की सुबह भी बापू के प्रवचन होंगे, तत्पश्चात सद्‌गुरु साईं आसारामजी बापू चेटीचंड महायात्रा में शिरकत करेंगे, यह पूरे शहर के लिए चेटीचंड पर्व की सबसे बड़ी सौगात होगी। उसी दिन हेलीकॉप्टर से बापू द्वारा भक्तजनों पर

फूलों की वर्षा की जायेगी। धन्य है सिंधी संप्रदाय जहाँ अनेकों संतों-महात्माओं ने जन्म लिया है, मानवजाति की निःष्काम भाव से सेवा की है। सेवा से मुझे मेरी माताश्री ब्रहमलीन माता रुकमणी देवीजी की याद हो आई. जिन्होंने अपने संपूर्ण जीवन में भगवान शिव की उपासना की और मन मंदिर में भगवान झूलेलाल की भक्ति की अखंड ज्योत जला रखी थी। वो ज्योत आज भी माताजी के लाखों भक्तों के दिलों में जल रही है और हम सब प्राणी मात्र की सेवा करके, अपने-अपने जीवन को धन्य कर रहे हैं। इस चेटीचंड महायात्रा के अवसर पर परम पूज्य साईं आसारामजी बापू के सतसंग स्थल पर भी माता रुकमणीदेवी सामाजिक संस्था की तरफ से भगवान झूलेलाल के लाखों भक्तों के लिये जल प्रसादी शरबत की सेवा की जा रही है। मुझे याद है, वे दिन जब भी साईंजी के उल्हासनगर में आगमन पर खुद माताजी पेयजल एवं प्रसाद की सेवा में रहती थीं। सेवा का यह गुण माताजी को उनके गुरु सदगुरु साईं स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज से प्राप्त हुआ था। आज माताजी का आशीर्वाद हम सबके साथ है, सबका कल्याण कर रहा है। तो आइये चेटीचंड के इस शुभ अवसर पर संपूर्ण सिंधी प्रजाती, संपूर्ण मानवजाति के मंगलमय जीवन की शुभकामनाऐं अपनी झोली पसारकर भगवान झूलेलाल से मांगे। भगवान झूलेलाल हमें अपना आशीर्वाद प्रधान करें और हम मानवजाति की सेवा आजीवन करते रहें। ऐसी शुभकामनाओं के साथ माता रुकमणी देवी जी का पुत्र आपको सादर नमन करते हुए चेटीचंड एवं गुढ़ीपाडवा की लाख-लाख, करोड़-करोड़ बधाइयां एवं शुभकामवाऐं देता है. आपके सहयोग और साथ के लिए धन्यवाद!



ओम नमः शिवाय, जय झूलेलाल,

आपका विश्वसनीय
प्रधान - संपादक

दीपक एम. रोहरा

वरुणावतार श्री. झूलेलाल भगवान



"यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवती भारतय।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदा..त्मनं
सृजाभ्यमह ।।"

जब-जब धर्म की हानि होती है, अधर्म और पाप बढ जाता है, तब-तब प्रभु स्वयं किसी न किसी रुप में अवतार लेकर पापियों का नाश कर धर्म की रक्षा करते हैं। चेटीचंड विक्रम संवत् का पवित्र शुभारंभ दिवस है। आज ही के दिन विक्रम संवत् १००७ सन् ९५१ ई. में सिंध प्रांत के नसरपुर नगर में श्री रतनराज के घर माता देवकी के गर्भ से प्रभु स्वयं तेजस्वी बालक उदयचंद्र के रुप में अवतार लेकर पैदा हुए और पापियों का नाश कर धर्म की रक्षा की।

उन दिनों सिंध के ठट्ठा नामक नगर में एक अत्याचारी मिरखशाह नामक शासक का राज्य था। वह हिन्दुओं के प्रति अति क्रूर था। मिरखशाह को उनके मुल्ला-मौलवियों ने भडका रखा था कि यदि वह हिन्दुओं को मुसलमान बनायेगा तो उसे जन्नत नसीब होगी। क्यों कि बादशाह को सच्चे इस्लाम एवं मजहब की जानकारी न थी, इसलिए उसने अपने राज्य में यह घोषणा करवा दी कि जो व्यक्ति इस्लाम कबूल नहीं करेगा उसे सख्त से सख्त सजा दी जायेगी तथा उसे मौत के घाट भी उतारा जा सकता है। इस दृष्टिकोन से हिन्दुओं पर कई प्रकार के अमानुषिक अत्याचार ढाये जाने लगे और कईयों को मौत के घाट उतार दिया गया।

अत्याचारों से पीडित हिन्दु त्राहि-त्राहि कर उठे तथा हिन्दुओं के कुछ मुखिया व पंच लोग बादशाह के पास गये और उनसे प्रार्थना की कि धर्म परिवर्तन करना इतना आसान नहीं है अत: उन्हें सात दिन का समय दिया जाये ताकि वे विचार-विमर्श कर सकें। बादशाह ने मौलवियों से परामर्श कर उन्हें कहा कि ऐ मुखियाओं व पंचों यद्यपि मुझे तुम्हारे इष्टदेव आदि में विश्वास नहीं है फिर भी मैं तुम्हें सात दिन की अवधि देता हूँ। हिन्दुओं की आदिकाल से जल एवं ज्योति में आस्था रही है, अत: वे पवित्र सिंधु नदी के किनारे आये और लगातार सात दिन तक भूखे-प्यासे रहकर वरुण देवता की स्तुति करने लगे। हिन्दुओं ने प्रभु को धर्म की रक्षा हतु पुकारा। निरंतर भूखे-प्यासे रहकर प्रार्थना करने से प्रभु का हृदय पिघल उठा। अचानक गर्जना हुई और एक विशाल मछली पर दिव्य पुरुष अवतरति होकर अन्तर्ध्यान हो गये एवं आकाशवाणी हुई, हिन्दुओं तुम लोग निर्भय एवं निश्चिंत हो जाओ मिरखशाह बादशाह तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं कर सकता। मैं तुम्हारी सहायता के लिए नसरपुर में अपने भक्त रतनराय के घर माता देवकी के गर्भ से जन्म लूँगा। आकाशवाणी सुनकर सभी गद-गद हो उठे और भगवान की जय-जयकार करते हुए अपने-अपने घरों को चले गये।

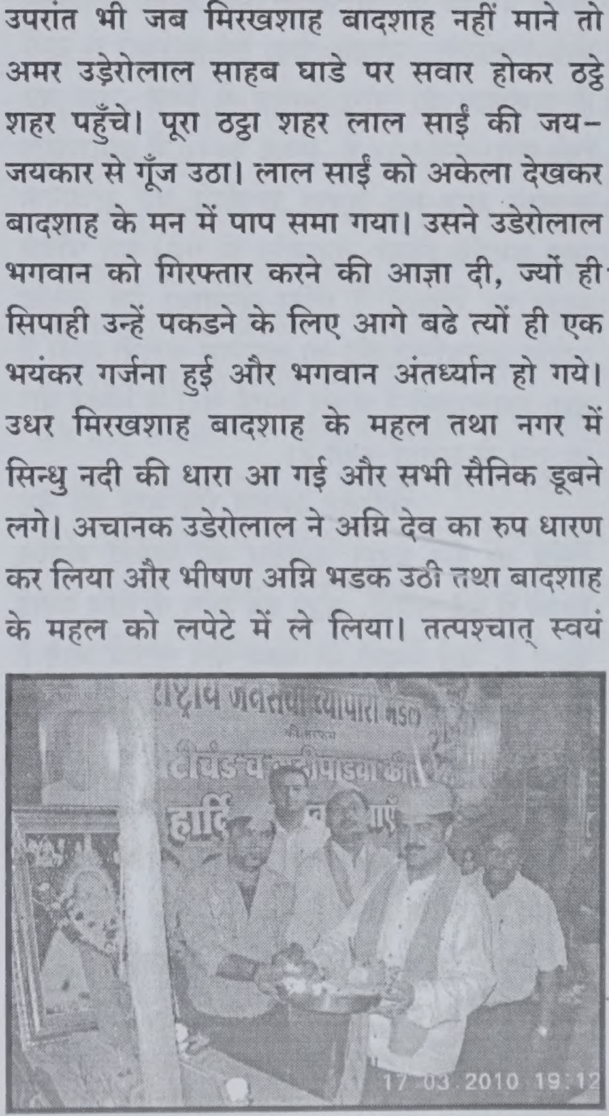
सन ९५१ ई. विक्रम संवत् १००७ चैत्र शुक्ल द्वितीया थारुंअ (शुक्रवार) के शुभ दिन सायंकाल (चंद्र दर्शन) के समय भगत रतनराय के घर नसरपुर में एक सुंदर बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम उदयचंद रखा गया। उनके जन्म के समय बादलों की मंद-मंद गर्जना हो रही थी, हल्की-हल्की फुहार पड रही थी तथा शीतल पवन के झोंके चल रहे थे। सभी के हृदय आनंद से विभोर हो उठे और आकाश से फूलों की वर्षा हुई।



श्री उड़ेरोलाल को जब माता स्तनपान कराने लगी तो उसने अपना मुँह बंद कर लिया। रतनराय के साथ वैद्यों और हकीमों ने बहुत प्रयास किये लेकिन उडेरोलाल टस से मस नहीं हुए। जब सभी प्रयत्न विफल हुए तब अचानक उडेरोलाल ने अपना मुँह खोला, माता देवकी ने बडा ही विचित्र कौतुक देखा कि बालक के मुख में सिन्धु की धारा चल रही है, जिसमें जल के जीव घूम रहे हैं। एक सफेद वस्त्रधारी और श्वेत दाढी वाला महापुरुष उसके पुत्र को अंजली से जल पिला रहा है। यह आश्चर्य देखकर माताजी ने अनुमान लगाया कि हो न हो बच्चे की इच्छा है कि पहले वरुण देव की पूजा कर सिन्धु से जल मंगाकर अंजली द्वारा उसे पिलाया जाए। तब ही वह इस संसार का प्रथम आहार स्तनपान करेगा। तब आटा गूंथकर धूप, पुष्प चंदन आदि सिन्धु नदी पर भेजकर वहाँ दीप प्रज्जवलित कर वरुण देव की पूजा की गई और जल के जीवों को भोजन दिया गया, तब वहाँ से जल लाकर बच्चे के मुँह में डाला गया तो तुरंत ही बच्चा दूध पीने लगा।

धीरे-धीरे इस तेजस्वी बालक की साख मिरखशाह के कानों तक पहुँची। अब हिन्दुओं को विश्वास हो गया कि स्वयं भगवान उनके रक्षक बन कर पृथ्वी पर आ गये हैं। उधर नित प्रतिदिन मिरखशाह बादशाह भयानक स्वप्न देखने लगा। एक दिन मिरखशाह बादशाह ने अपने मंत्री अहियो को एकांत में बुलाकर इन भयानक स्वप्नों से अवगत कराया तथा तुरंत नसरपुर जाकर उस बालक को मार डालने का आदेश दिया। नसरपुर पहुँच कर मंत्री ने उस बालक को मारने की दृष्टि से एक गुलाब के फुल में विष डाला और उस बालक को भेंट किया। अमर उडेरोलाल ने उस फूल पर जोर से फूँक मारी तो वह फूल कहि दूर जा गिरा और मंत्री स्वयं बेहोश होकर गिर पडा। मूर्छित अवस्था में उसने लाल साईं की कई विचित्र लीलाएँ देखीं। उसने देखा कि लाल साईं घोडे पर सवार है, उनके एक तरफ कई देवी-देवता स्तुति कर रहे हैं और दूसरी और सिन्धु नदी की धारा से हजारों सैनिक बाहर आ रहे हैं तथा आकाश से पुष्प वृष्टि हो रही है। होश में आने पर अहियो ने श्री उडेरोलाल से माफी माँगी तथा वहाँ से वापस आकर मिरखशाह बादशाह को संपूर्ण वस्तुस्थिति से अवगत कराया एवं निवेदन किया कि वे हिन्दुओं पर तुरंत जुल्म करना बंद कर दें।

तुरंत ही वह ओजस्वी बालक अपने चमत्कार से जवान बन गया तथा उन्होंने मिरखशाह बादशाह को हिन्दुओं पर जुल्म न करने के लिए कहलवाया। इसके उपरांत भी जब मिरखशाह बादशाह नहीं माने तो अमर उड़ेरोलाल साहब घाडे पर सवार होकर ठट्टे शहर पहुँचे। पूरा ठट्टा शहर लाल साईं की जय-जयकार से गूँज उठा। लाल साईं को अकेला देखकर बादशाह के मन में पाप समा गया। उसने उडेरोलाल भगवान को गिरफ्तार करने की आज्ञा दी, ज्यों ही सिपाही उन्हें पकडने के लिए आगे बढे त्यों ही एक भयंकर गर्जना हुई और भगवान अंतर्ध्यान हो गये। उधर मिरखशाह बादशाह के महल तथा नगर में सिन्धु नदी की धारा आ गई और सभी सैनिक डूबने लगे। अचानक उडेरोलाल ने अग्नि देव का रुप धारण कर लिया और भीषण अग्नि भडक उठी तथा बादशाह के महल को लपेटे में ले लिया। तत्पश्चात् स्वयं





मिरखशाह बादशाह अपनी हार मानकर श्री झूलेलाल भगवान के चरणों में गिर पडा और जीवनदान माँगने लगा। श्री झूलेलाल भगवान ने बादशाह को समझाया कि यह सारी सृष्टि प्रभु ने उत्पन्न की है तथा हिन्दु मुसलमान सब एक हैं। भले ही रास्ते अलग-अलग हों परंतु मंजिलें सभी की एक हैं। उसके उपरांत श्री झूलेलाल की स्तुति करते हुए धर्म-निरपेक्षता, एकता, प्रेम, एवं भाईचारे से दोनों ही सम्प्रदाय के लोग आपस में मिल-जुल कर रहने लगे। सन ९६४ ई. संवत् १०२० में अमरलाल भगवान भाद्र पद शुक्ल चतुर्दशी को अचानक जल समाधि लेकर अंतर्ध्यान हो गये। उस पवित्र स्थान पर हिंदुओं ने मंदिर बनवाया एवं अखंड ज्योति प्रज्जवलित की जो लगातार जलती रहती है तथा मुसलमानों ने मजार बनाई जहाँ वे जिंदह पीर के नाम से सजदा करते हैं।

चेटीचंड अर्थात चैत्र माह की चंद्र तिथि पर इस महान अवतार की जयंती समस्त विश्व में बडे उत्साह, श्रद्धा एवं उमंग के साथ मनाई जाती है, कई स्थानों पर भव्य मेले लगाये जाते हैं एवं विशाल शोभायात्राए निकाली जाती हैं। अब यह पर्व केवल धार्मिक महत्व तक ही सीमित न रहकर सिंधु सभ्यता के प्रतीक के रुप में एक दूसरे के साथ भाईचारे को दृष्टिगत रखते हुए सिंधियत दिवस के रुप में मनाया जाता है।

"संसार पर उतार हित, अवतार
था जिसने लिया,
सर्वेश होकर भी अहो नर के
सदृश कौतुक किया।
अमर लाल जिसका नाम ही
सुख धाम है,
उस ब्रहम और अव्यक्त को
मम बार बार प्रणाम है।।"

उपरोक्त पंक्तियों द्वारा भगवान श्री झूलेलाल जी को श्रद्धापूर्वक नमन कर सभी जन अपने कष्टों से मुक्ति पाकर धन्य हो जाते हैं।

पलउ(पलव)

पलव जे पाईनि तंहिंजा खावंदु खाली ना करे
दर त तुहिंजा सुभर भरिया लाल भरियाई आहिन।
हाणे आसाऊं आहिन वापारी हरिनाम जा
अचनि जे आश कर साईं तो वटि घोट घणा।।
बिया भी दातर देह में तो मंझि मर्द मणिया
हाणे जोसी जुग घणा तु त काइमु आहिं कलयुग में।
कायमि आहिं कलियुग में कायुमि तुहिंजा कम
उतारी अरवाह खां गामू लाहीं गम।
हाणे रखिजा लाज शर्म ढकीय साणु गुजार जाई
दुल्ह साईं दादिला तोखे सारियू सांझ सवेर।
स्वाल पुजाई संगत जा ढोलण ढरुऊ ढेर
हाणे आउ रत्नाणी शेर जो आशू पुजाई सारी संगत जू।
साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाई
मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाए।
हे मुंहिंजा लालसाईं हे मुहिंजी अम्बे माता
हे मुहिजा भोला भंडारी हे मुहिंजा गणपति देवा।
तव्हांजे दर ते जेके भी आया आहिन स्वालि
तिनजा स्वाल अघाईजा खाली कीन मोटाइजा।
माताउन जी झोली हरी भरी कजाय
न्याणियुनि जा भला भाग कजाय।
शेवाधारिन जी शेवा कबूल कजाय
शेवाधारिन खे शेवा करण जी शक्ती दिजाय।
दखिन जा दुख दूर कजायं सोखिन खे सुख प्रदान कजाय
आरतीअ में पलव में का भुल चुक थे त माफ कजाय।
धन्धे में वाधारो देश प्रदेश में शांति दि जाय।।
बोल अमरलाल भगवान को जय...........

आयोलाल झूलेलाल जेको चवंदो
झूलेलाल तहिंजा थींदा बेड़ा पार।

"माँ वैष्णोंदेवी भवन का प्रथम वार्षिक महोत्सव धूम धाम से संपन्न"



लाखों भक्तों की श्रद्धा का केंद्र माँ वैष्णोंदेवी भवन जो कि एक भव्य मंदिर है. यह मंदिर बॅरेक नं.६६७, रुम नं-१, झूलेलाल स्कूल के समीप उल्हासनगर-२ में स्थित है, यह मंदिर न सिर्फ उल्हासनगर बल्कि पूरे ठाणे जिल्हे में प्रसिद्ध है. ८ फरवरी २०१२ को इस मंदिर को एक वर्ष पूर्ण हुआ इसीके उपलक्ष्य में दि: ७ व ८ फरवरी २०१२ को एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था. जहाँ शहर के साधू, संत, महात्मा व शहर की कई गणमानीय हस्तीयां बड़ी संख्या में व अन्य भक्तगण उपस्थित थे. दि: ७-२-१२ को सर्वप्रथम सुबह महा चंडी हवन, माँ वैष्णोंदेवी पाठ व महायज्ञ कर इस कार्यक्रम की शुरुआत की गई तत्पश्चात शाम ७.०० बजे से १०.०० बजे तक माता रानी की ज्योत(चौंकी) आयोजित की गई थी. जहां माताराणी के परम भक्त श्री लच्छू जागरण मंडली ने माता रानी की भेंटें प्रस्तुत कर सभी भक्त गणों को मंत्रमुग्ध कर दिया. सचमें मानो उस शाम ऐसा महसूस हो रहा था कि हम सभी माता रानी के चरणों में बैठे उनका दीदार कर रहे हों. दि: ८-२-१२. की सुबह सर्वप्रथम दुर्गा महायज्ञ(हवन), दुर्गा पाठ व ९ कन्याओं का पूजन कर सारी विधियों सहित जगत जननी की महा आरती कर कार्यक्रम को पूर्णावती की गई. तत्पश्चात ९ कन्याओं को भोजन करवाने के पश्चात आम भंडारे(भोजन) की व्यवस्था की गई थी. इस शुभ अवसर पर माँ वैष्णोंदेवी भवन को राज महल की तरह सजाया गया था. रात की चांदनी में जगमगाती लाईटिंग को देख सभीजन व आस पास के परिसर वाले मन ही मन हर्षित हो रहे थे. सभी भक्तों की सेवा हेतु कई सेवाधारी भी उपस्थित थे जिनमें श्री मुकेश रंगवानी, श्री नरेंद्र रंगवानी, श्री दीपक रंगवानी, श्री भरत भाई व अन्य उपस्थित थे. जिन्होंने अपनी सेवा की परीपूर्णता से निभाकर सभी का मन मोह लिया. यह भव्य कार्यक्रम माँ वैष्णोंदेवी भवन के कर्ता धर्ता श्री मुकेश. पी. रंगवानीजी की अध्यक्षता में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ. इस स्वर्ण अवसर पर "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि.)" व "जीवन तरंग" परिवार के सदस्य जिनमें जीवन तरंग मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक व संस्था के जनरल सेक्रेटरी श्री दिपक.एम.रोहरा व श्री विजय राहाणे, श्री जय नाथानी, श्री अविनाश(ओम) वलेचा ने मातारानी के सानिध्य में उनके दर्शन कर, मातारानी का असीम आशीर्वाद प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक कीया.

जय माता दी

माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)

समाचार

"उल्हासनगर में महाशिवरात्री महापर्व पर धूम"



उल्हासनगर में महाशिवरात्री महा पर्व बड़े ही धूम धाम व हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया. इस वर्ष यह महा पर्व २० फरवरी २०१२, सोमवार के दिन आया. सोमवार होने के कारण इस पर्व का महत्व बढ गया। यह महा पर्व उल्हासनगर के हर शिवाले, हर शिव मंदिर, हर शिवमय स्थलों पर बड़े ही उमंग, उत्साह पूर्वक मनाया गया. जैसे कि पूज्यनीय ब्रह्मलीन माता रुकमणी देवीजी द्वारा स्थापित जागृत शिव मंदिर(शिवाले) में हर साल की भांती महाशिवरात्री का पावन पर्व बड़े ही धूम धाम से मनाया गया. रातभर (ॐ नम: शिवाय) के मंत्र उच्चारणों दुध, दही, मख्खन व गन्ने के रस के साथ अभीषेक किया गया. प्रात: काल सुबह से भक्तों का पुजा-अर्चना हेतु ताँता लगा हुआ था. तत्पश्चात गादीनशीन श्रीमती हीर दीपक रोहराजी (माताजी की पुत्र वधू) ने भोले शंकर की कथा सुनाकर मधुर भजन गाकर माताजी की तरह भोलेनाथ शिव शंभू को रिझाने की संपूर्ण कोशिश की। ताकि महादेव शिव शंकर उन्हें भी उतनी शक्ती प्रदान करें कि वे भी पूज्यनीय माता रुकमणी देवीजी के सामाजिक कार्यों में सक्षम बने. माताजी की पुत्रवधू श्रीमती हीर दीपक रोहरा जी, श्रीमती रेनू सिधवानी, श्रीमती मीना टीकमदास ओचानी द्वारा गाये हुए मधुर भजनों को सुन सभी भक्तगण आनंद विभोर हो गए। तत्पश्चात प्रसाद की व्यवस्था भी की गई। इस स्वर्णीय अवसर पर कई सेवाधारियों ने अपनी बहुमूल्य सेवाएँ दीं। जिन में श्री मनोज चिमनदास रोहरा, श्री सुभाष देवानी, श्री विजय राहाणे, श्री जय नाथानी व अन्य शिव भक्तों ने अपनी सेवा की जिम्मेदारी को बखूभी निभाकर सेवा के पात्र बने व भगवान शिव शंकर के दरबार में हाज़री लगाकर अपना जीवन धन्य बना दिया. कार्यक्रम के संपन्न होने पश्चात परिसर में प्रसाद वितरण किया गया.

शाम को भगवान महादेवजी की महा आरती की गई. तत्पश्चात माता रुकमणी





देवी की भांति महाशिवरात्री वाली रात देर १२.०० बजे उल्हासनगर-५ में स्थित संत प्रभाराम दरबार में माताजी पुत्र व पुत्रवधू श्रीमती हीर दीपक रोहरा, पोता-यश, पोतियां-महीमा, करिष्मा, नाती भावना नीलकंठ लिड़वानी सहित निर्जल व्रत रख पहुंचे जहाँ हजारों की संख्या में भक्त गण उपस्थित थे. न सिर्फ मंदिर का परिसर बल्कि मुख्य रास्तों को भी बंद करवाया गया. बड़ी ही श्रृद्धा के साथ भक्तों ने अपने साथ लाए हुए शिवलिंग का अभीषेक कर, पुजा-अर्चना की. यह देख मानो ऐसा महसूस हो रहा था कि हम सब बाराती शिव की शादी में सम्मलित हो गए हों. ब्राहमण देवता समस्त शिव भक्तों की पुजा अर्चना की विधी का मार्गदर्शन कर रहे थे और मंत्र उच्चारण करवा रहे थे. संत प्रभाराम मंदिर ट्रस्ट के आयोजकों का यहां धन्यवाद देना नहीं भूलेंगे जिनमें दादा सतरामदास जेसवानी जी, श्री मुरली नारा, श्री मन्नू भागा, श्री अशोक कारो, श्री मुकेश नारा, श्री रवि शिवन, श्री डोलु, श्री जयराम, श्री मनिष नारा व हिल लाईन्स पुलिस स्टेशन के कई वरिष्ठ अधिकारी व अन्य शिव प्रेमियों ने देर रात तक हर उस जरुरी चीज की व्यवस्था कर रखी थी, जिस की भक्तों को जरुरत थी. जैसे कि पुजा-अर्चना हेतु पुष्प, बेलपत्र, दूध, दही, यहां तक कि भक्तों के साथ आए हुए बच्चों के लिए पानी की व्यवस्था पाऊच के रुप में की गई थी. मध्यरात्री तक यह कार्यक्रम जोरों शोरों व हर्षोउल्लास के साथ बड़े ही धूम धाम के साथ मनाया गया.

अंबरनाथ स्थित प्राचीन शिव मंदिर में भी भव्य मेला लगा हुआ था. जहां पिछले साल की तुलना की जाये तो इस वर्ष लाखों की संख्या में शिव भक्तों ने महादेव के दर्शन, पुजा-अर्चना की. मंदिर में तो अंदर पैर रखने तक की जगह नहीं थी. इस भव्य मेले में विभिन्न प्रकार की वस्तुऐं, बच्चों के लिए खिलौने, विविध साधनों से मेला सजा हुआ था. शिव भक्तों ने अपने अपने तरीके से जल-प्रसाद अपनी दुकानों, बिल्डिंगों के बाहर बांटकर सेवा की, तो किसी ने अपनी अद्‌भुत कला से भगवान शिव की मन मोहक प्रतिमांऐं बनाकर लोगों का मन मोह लिया. हर तरफ (बं बं भोले)(हर हर महादेव) की जयकारे सुनकर ऐसा लग रहा था, कि मानो हम इस संसार सागर को छोड़ शिवनगरी में जा पहुंचे हों.

उल्हासनगर - ३ स्थित पवई हीराघाट स्थित (ॐ शिव विश्व शांति धाम) शिव मंदिर में भी भगवान शिव की ३६ फीट विशाल प्रतिमा के दर्शन हेतु लाखों शिव भक्त पहुंचे परम शिव भक्त श्री दिपक गिदवानी एवं सैकड़ों सेवाधारी भक्तों हेतू समस्त व्यवस्थाऐं





कर रखी थी . यहाँ भी महाशिवरात्री के अवसर पर भव्य मेला लगता है. संपूर्ण रात्री से लेकर दूसरे दिन देर रात तक भक्तों ने दर्शन किये. जहां लगातार ३० घंटों तक प्रसिद्ध निवेदक श्री अनुराग आचार्यजी ने अपनी छोटी बहन रेकी ग्रेंड मास्टर रीया गिदवाणी के साथ विनमृ भाव से भगवान शिवजी से संबंधित हर सवाल का जवाब दिया व लोगों को अपने-अपने टी.व्ही सेट से जोड़कर रखा. जग्गू मुव्हिज व कोनॉर्क यू.एस.ए.डेन केबल नेटवर्क की माध्यम से संपूर्ण उल्हासनगर, कल्याण व अंबरनाथ शहर समूचे मेले का सीधा प्रसारण दिखाया गया. श्री अनुराग आचार्य ने शिवजी के संदर्भ में हर वह बात बतायी जिसका ज्ञान शायद कई लोगों को नहीं था. मानो ऐसा लग रहा था कि शिवपुराण व सारी कथाएँ उन्हें कन्ठस्थ हो. वहां उपस्थित शिव भक्तों ने उनका तहे दिल से आभार प्रकट कीया. इसी प्रकार उल्हासनगर-२, खेमानी रोड झूलेलाल स्कूल के समीप स्थित "माँ वैष्णों देवी भवन" में भी महाशिवरात्री बड़े ही धूम धाम व हर्षो ऊल्लास के साथ मनाया गयो. इस मंदिर में स्थित शिवलिंग को बडे ही अद्‌भुत तरीके से सजाया गया था जिसे देख सभी शिव भक्त आनंद विभोर हो गए. महाशिवरात्री के दिन प्रातःकाल ५ बजे से ही शिव शंकर का महाअभीषेक व महाआरती की गई. तत्पश्चात शिव शंकरजी को थंडाई, प्रसाद(भोजन) का भोग लगाकर आम भंडारे का आयोजन कीया गया. यह इस मंदिर के कर्ता-धर्ता श्री मुकेश.पी.रंगवानीजी की निगरानी में संपन्न हुआ. इसी तरह पिंपलेश्वर महादेव मंदिर साधुबेला स्कुल के समीप उल्हासनगर - १ में भी पंडित गुलाब महाराजजी की अध्यक्षता में भी चारों पहर भगवान भोलेनाथ की महापुजा कर दुग्ध, दही, राई का तेल, गन्ने का रस, फल, शहद, इत्र से महाअभिषेक व महाआरती की गई । जहां श्री गोप पंजाबीजी, प्रकाश जेसवानी जी, श्री अमृत सुखेजाजी, श्री भोजोमल रोहरा, श्री सच्चानंद गोपलानी व अन्य शिवभक्तों ने सेवा कर अपना जीवन धन्य किया. भगवान भोलेनाथ उनकी हर मनोकामनाऐं पूर्ण करते हैं, जो सच्चे हृदय से उनकी भक्ती करते हैं संपूर्ण उल्हासनगर शहर महाशिवरात्री के दिन ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे नलिकंठ महादेव की काशी नगरी हो जो भक्तों को मोक्ष प्रदान कर रही है. उल्हासनगर शहर को संतों का शहर कहा जाता है, लेकिन महाशिवरात्री के दिन यही उल्हासनगर शहर शिव भक्तों का शहर नजर आया. उल्हासनगर के समस्त शिव मंदिर के भक्तों की मनोकामनाऐं भगवान शंकर पूर्ण कर रहे थे. "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)" व मासिक पत्रिका "जीवन तरंग" उन सभी शिव भक्तों को शत् शत् नमन करते हैं जिन्होंने महा शिवरात्री में सेवा कार्य किऐ.

"ॐ नमः शिवाय"



"माता राणी के सानिध्य में मनाया गया जन्म दिन"



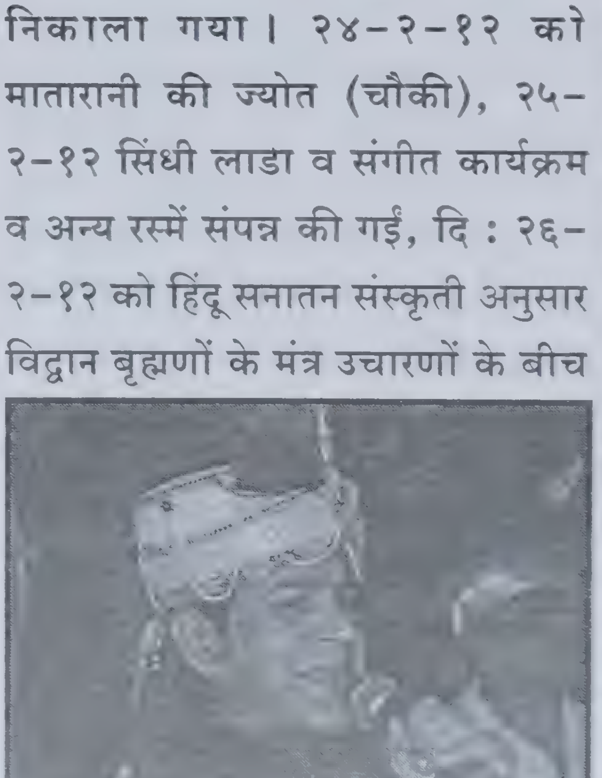
माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.) के ट्रस्टी व समाजसेवक श्री जयकुमार किशनचंद नाथानीजी जो की पिछले कई वर्षों से माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था से जुड़े हुए हैं व सदैव संस्था के कल्याणकारी कार्यों में तत्पर रहते हैं। दि. २९ फरवरी को जयकुमार नाथानी जी के पोते मास्टर निकलेश धर्मेन्द्र नाथानी का ५वां जन्मदिन व जयकुमारजी के पिताजी श्री किशनचंद नाथानी का ७५ वां जन्मदिवस बड़े ही धूम धाम व जोरों शोरों से उल्हासनगर-१, स्थित लासी हॉल में मनाया गया. इसी के उपलक्ष्य में जगतजन्नी माता रानी की ज्योत(चौकी) का भी आयोजन कीया गया था. जहां शहर की कई दिग्गज हस्तियां उपस्थित थीं. जिन में शहर के आमदार श्री कुमार आयलानीजी, समाजसेवी श्री दिलीप लालवानी, जीवन तरंग के प्रधान संपादक श्री दीपक.एम.रोहराजी, श्री चंद्रु हरदासीजी, श्री मनोज साधनानी, टोनी लालवानी, संजय बिजलानी, मधूसूधनजी के सुपुत्र, श्रीमती भारती छाब्रीया, रमेश मिश्रा, श्री संतोष आयलानी व अन्य उपस्थित थे. जहां सभी जनोंने माताजी के दर्शन कर उनका असीम आशीर्वाद प्राप्त कीया साथ ही साथ मास्टर निकलेश व श्री किशनचंद नाथानीजी को उनके जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाऐं दीं. माता रानी के मधुर मनमोहक भजनों को सुन मानो सभी मंत्र मुग्ध हो गये. तत्पश्चात एक विशाल केक काटकर जन्मदिन मनाया गया. सभी अतिथिगणों हेतु महाप्रसाद के रुप में भोजन का आयोजन कीया गया था. जहाँ सभी ने भोजन की तहे दिल से प्रशंसा की. परदादा और पर पोते का जन्मदिन एक ही दिन दि. २९ फरवरी जो कि ३ सालों में एक बार आता है. इसी कारण इस दुगनी खुशी की लहरें छाई हुई थी. मास्टर निकलेश नाथानी के परदादा श्री किसनचंद नाथानी, दादा जयकुमार नाथानी, मम्मी-पापा-सिमरन-धर्मेंद्र नाथानी, चाचा गिरीश नाथानी व संपूर्ण नाथानी परिवार ने अपने सभी शुभचिंतकों के स्वागत में कोई कमी न होने दी. इस स्वर्णीय अवसर पर "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था" व "जीवन तरंग" परिवार के सदस्य भी उपस्थित थे जिन में प्रधान संपादक श्री दीपक रोहरा, श्री अविनाश(ओम) वलेचा, श्री विजय राहाणे, श्री राजनाथ(पप्पू) गुप्ता, श्री निमेश व अन्य मान्यवर उपस्थित थे जिन्होंने माता रानी के दर्शन कर अपना जीवन सफल बनाया." माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)" व "जीवन तरंग" परिवार की ओर से श्री किशनचंद नाथानी व मास्टर निकलेश को व नाथानी परिवार को उनके जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ ....

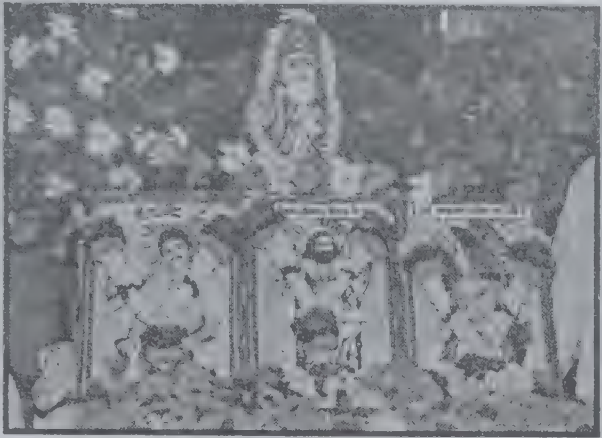
शहजादे साईं ओमी राम जी विवाह सूत्र में बंधे





देश – विदेश में विख्यात हिन्द से पाकिस्तान (सिंध) के करोड़ों दिलों की धड़कन साईं वसणशाह दरबार के शहजादे साईं ओमीराम जी का शुभ विवाह श्री रतनलाल अगीचा जी की सुपुत्री कुमारी सुनीता जी से दि: २६–२–२०१२ को बड़े धूम धाम से संपन्न हुआ। संपूर्ण उल्हासनगर के लिए यह विवाह अभूतपूर्व यादगार रहा। सिंधी समाज में चर्चा का विषय बना हुआ था शहजादे साईं ओमीराम साहिबजी का यह विवाह। क्योंकि ऐसी शादी न कभी हुई है, शायद ही देखने को मिले। क्योंकि विवाह का निमंत्रण ही मनमोहक व बेमिसाल था। तो लोगों की उपेक्षा और बड़ गयी तो विवाह कितना जोरदार होगा। देश विदेश से आए हुए भक्तों कलाकार मानो जैसे अपनी हाजिरी भरने को बेताब थे। दि: २०/२/१२ से २८/२/१२ तक वसणशाह दरबार में मानो महाकुंभ का मेला लगा हुआ था। कार्यक्रम इस प्रकार था दि : २०–२–१२ को भोग साहिब, २१–२–१२ अमावस्या की रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम व भजन कीर्तन, २२–२–१२ को Ring ceremony (सगाई की रस्म) २३–२–१२ को भगवान झूलेलाल जी की ज्योत जगाकर बहराणा साहेब निकाला गया। २४–२–१२ को मातारानी की ज्योत (चौकी), २५–२–१२ सिंधी लाडा व संगीत कार्यक्रम व अन्य रस्में संपन्न की गईं, दि : २६–२–१२ को हिंदू सनातन संस्कृती अनुसार विद्वान बृह्मणों के मंत्र उचारणों के बीच





सारी रीतो रस्में एवं विधिवत् सहराबंधन व वेढ़ी शुभ विवाह समस्त संतों व पूर्वजों के आशीर्वाद से संपन्न हुआ। दि : २७-२-१२ को उल्हासनगर शहर के समीप सीमा हॉलीडे होम, वरप स्थित कल्याण में रिसेपशन कार्यक्रम बड़े ही शानदार तरीके से किया गया। विवाह स्थल पर पहुंचते ही ऐसे प्रतीत हो रहा था कि मानो हम देवलोक में पधारे हों। वर-वधू व आए हुए समस्त मेहमानों पर देवीयों द्वारा पुष्प वर्षा की जा रही थी। हिंद-सिंध से आए हुए समस्त पीर, पैगंबरों, साधू-संतों के लिए विशेष स्थान सजाया गया था। बर्फ की सुंदर आकृतियों का स्वरुप देकर देव आदि देव महोदेव, बृह्मा, विष्णू, नारदजी, गणेशजी व साईं वसणशाह साहेब जी के सुंदर स्वरुपों को देख सभी जन हर्षित हो गए। हेलीकाप्टरों द्वारा पुष्पों व इत्र की वर्षा की गई जिससे संपूर्ण माहौल खुशहाल हो गया। उन्हीं सबके बीच देश-विदेशों से आए कई कलाकारों, फनकारों ने अपने जोरदार अभिनीय प्रदर्शन करते हुए साईं वसणशाह जी, साईं गुरुमुख दास साहेबजी तथा साईं आत्माराम साहेबजी पर आधारित कई मधुर गीत पेश किये। तथा शहजादे साईं ओमीराम जी के शुभ विवाह के अनूठे गीत गाकर हजारों की संख्या में उपस्थित अतिथिगणों का मन मोह लिया। इस स्वर्ण अवसर पर शहर भर की दिग्गज हस्तियाँ जिन में आमदार, पूर्व आमदार, सभी पक्षों के राजनेता व व्यापारी महामंडल व एवं सभी संस्थाओं के दिग्गज मौजूद थे। उपस्थित सभी मेहमानों के लिए ५६ भोग स्वादिष्ट व्यंजनों का प्रबंध कर सभी को तृप्त किया गया। उस स्वर्ण अवसर पर साईं परमानंद साहेब, साईं हीरालाल जी, साईं कालीराम साहेब, सभी के लाड़ले साईं छोटूराम साहेब जी तहे दिल से आए हुए सभी मेहमानों का हार्दिक स्वागत कर असीम आशीर्वाद प्रधान किया। इस शादी व अविस्मर्णीय विवाह के नव दंपती साईं ओमीराम जी , सुनीता व संपूर्ण जगयासी परिवार को माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि) व अध्यात्मिक पत्रिका "जीवन तरंग" परिवार की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं।



आपके S.M.S.

बेस्ट S.M.S. ऑफ मन्थ



आप भी इस नंबर पर कर सकते है
Mobile No. 09403940007.

1. पुनम का चांद रंगों की डोली, चांद से उसकी चांदनी बोली, खुशियों से भर दे सबकी झोली, मुबारक हो आपको "Happy Holi"

2. राधाजी बोली श्री कृष्ण से, एक शर्त पे खेलूंगी प्यार की होली, जीतूं तो तुझे पाऊं और हारूं तो तेरी हो जाऊं....

श्री. अनुराग आचार्य:-09323498464

3. यह रंगों का मौसम जो आया है, साथ अपने कितनी खुशीयां लाया है, इससे पहले कोई रंग दे इसलिए शुभकामनाओं का रंग पहले से ही भिजवाया है।

श्री.भावना लिड़वानी:- 09321380291

4. मार्च जो महीनो, गर्मी जी मार, गुलाल जो रंग पिचकारीअ जी भौछाड़, गीअर जी खुशबू, जिलेबीअ जो स्वाद, होलीअ जी मस्ती पहिंजन जो प्यार, मुबारक हुजे तवहां खे होली जो त्यौहार.

श्री. कैलाश नागदेव :- 9322568810

5. भांग की खुशबू थंडाई की मिठास, रंगों की बहार होली का त्यौहार, आने को है तैयार, थोड़ी सी मस्ती थोड़ी सा प्यार, सबसे पहले मुबारक हो आपको होली का त्यौहार।

श्री. गुल R.K.T. College :- 09322084500

6. "होली मुबारक" लाल आपके गालों के लिए, गोल्ड आपके बालों के लिए, निला आपके आखों के लिए, गुलाबी आपके होठों के लिए, पीला आपके सपनों के लिए, हरा आपके जीवन के लिए, होली के इन सात रंगों के साथ आपकी जिंदगी रंगीन हो।

श्री. कालूराम कोटा, राजस्थान:-09413058264

7. हर रंग कुछ कहता है, कोई फीका कोई गहरा होता है. गलाल का रंग तो मुझे मालूम नहीं पर रिश्तों का रंग गहरा होता है-

श्री. पप्पू ठाकुरदास बेहराणी :- 09822074000

8. यूं तो हर बार होली आती है, और सभी को रंग जाती है, वो रंग छूटट जाते हैं, मगर आपके स्नेह का रंग हमेशा लगा रहता है।

श्री. दिल्लीप (पूजा फोटो):- 09324348010

9. जिंदगी का सबसे प्यारा सच :- लाईफ में कभी उससे प्यार मत करो जो जिंदगी में बहुत सुंदर है, बल्कि उससे प्यार करो जिसके कारण आपकी जिंदगी सुंदर है.

श्री. महाराज महेंद्र शर्मा :-9322777947

10. मुसीबत में कभी किसीसे मदद मत मांगो, क्योंकि मुसीबत सिर्फ चार दिन की होती है और ऐहसान जिंदगी भर रहता है।

श्री. परषोत्तम खत्री:-09272535911

11.जब जिंदगी हसाये तब समझना कि अच्छे कर्मो का फल है। और जब जिंदगी रुलाये तब समझ जाना कि अच्छे कर्म करने का वक्त आ गया है।

श्री.अशोक वाटवानी :- 09321747020

12. रात भर जागकर उन्हें याद करते हैं, साथ नहीं हैं वो जिन्हें प्यार हम करते हैं। जीते हैं जब उनके बिना तो ऐसा लगता है जीकर भी हम एक गुनाह करते हैं।

श्री.रमेश मिश्रा :- 09322385537.

13. करीब इतना रहो कि रिश्तों में प्यार रहे, दूर भी इतना रहो कि आने का इंतजार रहे। रखो उम्मीद रिश्तों के दरमियान में इतनी कि टूटे उम्मीद मगर रिशता बरकरार रहे।।

श्री. परमानंद वाधवा(अहमदाबाद):-08490910808



सदगुरु महामंडलेश्वर १०८ सतगुरु स्वामी विश्वात्मानंद
सरस्वती जी के संग " जीवन तरंग "



दक्षिण हैद्राबाद के प्रसिद्ध भागवत कथा वाचक
महाराज दीपक शर्मा जी के हाथों मे " जीवन तरंग "



१०८ महंत बाबा गंगाराम दरबार के गादीनशीन
बाबा शंकरलाल जी " जीवन तरंग " के संग



माता पुष्पा देवी जी (बाबा गुनीराम दरबार वाले)
के संग " जीवन तरंग "



बाबा मेंघराजमल जी के परम शिष्य
भाई रेवाचंद जी के संग " जीवन तरंग "



सुप्रसिध्द लोक गायका आशा भावन
के संग " जीवन तरंग "



भ.ज.पा. महाराष्ट्रा के एम.एल.सी. डॉ. गुरमुख जगवानी
प्रधान संपादक दीपक रोहरा जी के संग



माता रुक्ममिणी देवी शिव मंदिर मे कोनार्क केबल के पार्टनर
श्री. कमल भठीजा, वेदप्रकाश रोहरा " जीवन तरंग " के संग


चेटीचंड


महायात्रा



माँ वैष्णों देवी भवन
|| माँ वैष्णों देवी भवन ||
बैरक नं. 667 रूम नं.1 , झुलेलाल स्कुल के बाजु मे,
खेमाणी, उल्हासनगर 2. ठाणे. महाराष्ट्र.
फोन नं. 0251-2730880. मो: 9850040660.
सेवा मे : श्री मुकेश पी. रंगवानी परिवार

RISING STARS

उभरते सितारे

श्री गिरधर (भगत) पहूजा



माँ भगवती हिंगलाज माता की कृपा से श्री गिरधर किशनचंद पहूजा जी का जन्म दि:२३/१२/१९७१ में उल्हासनगर में श्री किशनचंद रेलूमल जी के घर हुआ। गिरधरजी को बच्चपन से ही उनके माता पिता द्वारा उच्च संस्कार प्राप्त हुए। जैसे कि बड़ों का आदर सतकार करना व नित नियम माँ भगवती भवानी की भक्ती करना व बाल्य अवस्था में ही गिरधर भाई माता रुकमणी देवी द्वारा होने वाले सामाजिक कार्यों में सेवा कर कई सद्‌गुणों को ग्रहण किया करते व माताजी का आशिष पाते गिरधर भाई बड़ों के कहे अनुसार "कोई काम छोटा नहीं होता" इस बात को तो उन्होंने गाँठ ही बांध ली थी। करीब २० वर्ष पहले गिरधर जी एक बार माता रानी की ज्योत में जा पहुंचे वहाँ पर उन्हें यह आभास हुआ कि जैसे माता भगवती भवानीजी स्वयं उन्हें अपनी गोद में बिठाकर प्यार कर रही है। वहाँ माता रानी के मधुर भजनों को सुन श्री गिरधरजी पुरी तरह से तृप्त हो गए। बस उसी दिन से श्री गिरधर जी ने अपना संपूर्ण जीवन माता रानी के चरणों में समर्पण कर गीत गाने का अभ्यास करने लगे और उन्होंने देखा कि उन्हें माता रानी के चरणों में रहने से उनके सारे दुख दूर हो रहे थ। उस वक्त उनके मन में यह विचार आया कि इस अमृत को औरों में भी बांटना चाहिए। माता रानीजी की कृपा से उन्होंने जागरण के कार्यक्रम शुरु किये। भगवती भवानीजी की कृपा ऐसी कि उन्होंने आज तक कोई भजन गाने हेतु किसी किताब, डायरी का उपयोग तक नहीं किया। आज भवानीजी की कृपा श्री गिरधर भाई पर इस प्रकार बरस रही है, कि वे आज न सिर्फ उल्हासनगर बल्कि थाना, मुलंड, वाशी, बोरीवली, चेंबूर, अंधेरी, वलसाड़, अहमदाबाद, मालेगांव जैसे कई बड़े-बड़े शहरों में माता रानी के ज्योत के कार्यक्रम कर चुके हैं और इसी बीच उन्हें एक बात का संदेह रहता था कि गुरु के बिना मेरा जीवन अधूरा है। इसलिए उन्होंने परम पुजनीय संत शिरोमणी श्री आसारामजी बापूजी से मंत्र दिक्षा गृहण की। उल्हासनगर में कई माता के जागरण कीये हैं गिरधर भाई जी ने, केवल इतना ही नहीं जो गरीब भक्त माता के जागरण करवाने की मन्नत रखते हैं परंतू उनकी माली परिस्थिती खराब होने के कारण वे इस कार्य में असमर्थ हो जाते हैं। उन सजन्नों के लिए हर शनिवार को (फ्रि जागरण) करते हैं। आज गिरधर भाईजी का मानना है कि वे आज जिस मुकाम पर हैं वे इसका पूरा श्रेय अपनी ईष्ट देवी माँ भगवती भवानी, ब्रहमलीन माता रुकमणी देवी व अपने गुरुदेव को देते हुए यह कहते हैं कि आज मैं जो कुछ हूँ आपकी बदौलत हूँ। "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)" और मासिक पत्रिका "जीवन तरंग" परिवार की ओर से हम भी श्री. गिरधर (भगत) पहुजा के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

संपर्क : ९३७१५५१४३३

जय माता दी.....................

मार्च २०१२

आपके तारे (श्री. व्यास गुरुजी द्वारा)



मेष (ARIES):- मासके प्रारंभ में



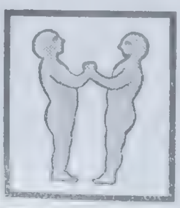
आपकी राशि पर शनि की पूर्ण दृष्टि पड़ रही है। गुरु मेष राशि में स्थित है अतः इस मास में आपकी दौड़-धूप ज्यादा रहेगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करें। धन लाभ उम्मीद से कम होगा। परामर्श :- कनकधारा स्तोत्र के नित्य १६ पाठ करें।

वृषभ (TAURUS):- केतु आपकी



राशि में स्थित है फलस्वरुप शारीरिक कष्ट व व्यय अधिक रहेगा। धनागमन के साधनों में विघ्न उत्पन्न होंगे। यात्रा का सुखद सहयोग बनेगा। परामर्श :- भगवान शिव के "अघोर मंत्र" की ११ माला जाप करें।

मिथुन (GEMINI):- राशि स्वामी बुध



नीच राशि में संचार कर रहा है फलतः जिससे भाग-दौड़ व खर्च अधिक रहेगा। मानसिक चिन्ता रहेगी। बनते कार्यों में अड़चने आयेंगी। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशसनियों का सामना।

परामर्श - सौंदर्य लहरी (आदि शंकराचार्य विरचित) स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

कर्क (CANCER):- अपने समय को



व्यर्थ के कामों से दूर रखें। व्यवसाय में आर्थिक परेशानी। शारीरिक कष्ट संभव। वाणी पर नियंत्रण रखें। परामर्श - भगवान कार्तिकेय की पूजा उपासना करते रहें।

सिंह (LEO):- १४ मार्च तक राशि स्वामि



सूर्य कुंभ राशि में संचार करेगा तथा अपनी राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। आपको मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। मित्रों की सहायता से बिगड़े कार्य बनेंगे। समय हंसी खुशी से बीतेगा। मासान्त में सेहत का ध्यान रखें। परामर्श - नित्य आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें।

कन्या (VIRGO):- सोच समझकर खर्च



करें। दोस्तों के साथ मटरगस्टी करने में समय व्यर्थ न करें। धोखा संभव है सावधान रहें।

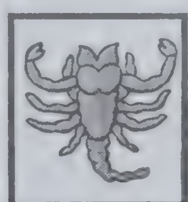
परामर्श - कार्तवीर्य अर्जुन मंत्र का जाप करें।

तुला(LIBRA):- विघ्न-बाधा और



परिश्रम के उपरान्त ही धन लाभ होगा। सरकारी क्षेत्रों में परेशानी। अकस्मात व्यय अधिक हो जायेगा। गलतियों के कारण बने हुए कार्य बिगड़ने की संभावना। परामर्श - सौभाग्य अष्टोतर शत नाम स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

वृश्चिक (SCORPIO):- इस माह



आपको धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। घर में हंसी खुशी का वातावरण रहेगा। उच्च प्रतिष्ठित लोगों से संपर्क बनेगा। भोग-विलास पर धन व समय का अपव्यय संभव है। परामर्श - देवी मंगल चण्डिका का पूजन श्रेष्ठ रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS):- लाभ-



मार्ग प्रशस्त होगा। नवीन कार्यों की योजनाऐं बनेंगी। शत्रु प्रबल होंगे। अधुरे, बिघड़े काम पूरे होंगे। मित्रों व महफिलों का सुख मिलेगा। शुभ समाचार मिलेंगे। परेमर्श :- दुर्गा सप्तशती का पाठ उत्तम रहेगा।

मकर (CAPRICORN):- भाग्य



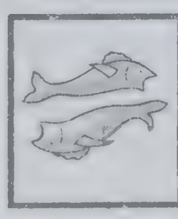
आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। रुकावटों से न घबरायें। पराक्रम करें लाभ प्राप्त होगा। साहित्य, संगीत या धार्मिक कार्यों में रुची बढेगी। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। परामर्श - जया-विजया-अपराजिता स्तोत्र का पाठ करें।

कुंभ (AQUARIUS) :- दुर्घटना का



भय संभव है अतः अपने वाहन को चलाने से पूर्व हनुमानजी को नमस्कार अवश्य करें। परिस्थितियां संघर्ष से भरी रहेंगी। लाभ-कर परिश्रम ज्यादा करना होगा। निर्वाह योग्य आय होती रहेगी। परामर्श - बनरंग बाण के नित्य ११ पाठ करें।

मीन (PISCES):- समय को व्यर्थ के



कार्यों में व्यतीत न करें। अत्यधिक संघर्ष से धन लाभ होगा। उदर तथा नेत्र रोग संभव। विवादों में उलझने से बचें। परामर्श - भगवान सूर्य के चक्षु शोपनिषद का पाठ करें।

हमारा शहर, हमारे संत

"साईं देवन राम साहेब"



साईं देवनराम साहिबजी का जनम १९०६ में सिंध के खैरपुर रियासत, मोरी गांव में श्री लालचंदजी के घर में हुआ। बालक देवनराम बाल्यकाल से ही हंसमुख व सादी रहणी वाले बालक थे। पढ़ने में उनका मन ही नहीं लगता था। जब बालक देवनराम बारह साल के थे, तब उनके पिताजी ने उन्हें गाय, बैलों को घास चराने का काम सौंप दीया। देवनरामजी हंसमुख स्वभाव के सज्जन थे। वे खुद भी हंसते व औरों को भी हंसाते। होली के महापर्व पर भगवान का स्वरुप(सांग) बना करते थे। मोरी गांव में दूसरे गांव के भी लोग सांग बनकर मोरी गांव में आते थे। व थल्ले की दरबार में पहुंचकर 'बारस' का मेला धूम धाम से मनाया करते। उस वक्त साईं लखीराम साहेब थल्ले की गादी पर विराजमान थे। उस वक्त साईं लखीरामजी ने बालक देवनराम को देख उनकी प्रशंसा कर बालक के सिर पर हाथ रखा। कार्यक्रम के समाप्त होते ही देवनराम जैसे ही घर पहुंचे तब उन्हें चैन ही नहीं आ रहा था। उनका घर में मन ही न लगे। उन्हें तो केवल साईं लखीराम का ही दीदार मिल रहा था। एक बार देवनराम जी बिना किसी को बताए शाहपुर थल्ले की दरबार की ओर पैदल रवाना हुए। मोरी गांव से पैदल ही पैदल चलते देवनराम जी आखिर थल्ले की दरबार में आ पहुंचे। साईं लखीराम साहेब देवनराम जी को देखकर खूब हर्षित हुए। देवनराम जी साईं जी के चरणों में गिरकर रोने लगे।

साईंजी ने उन्हें उठाकर गले लगाया। वहां देवनराम जी के माता पिता चिंतित होकर बालक देवनराम को ढूंढने लगे। कुछ देर पश्चात उनके माता व पिता उन्हें ढूंढते हुए थल्ले की दरबार में आ पहुंचे। अपने सुपुत्र को वहां सेवा करता हुआ देख वे प्रसन्न हुए। उनके माता-पिता जी ने साईं लखीराम जी से कहा आप अभी इसे छुट्टी दीजिए। साईंजी ने कहा मैंने इसे बांधकर तो नहीं रखा है आप इसे ले जाना चाहते हो तो ले जाओ। देवनराम जी के घरवाले उसे समझाते-समझाते थक्क गए। परंतु बालक घर जाना ही नहीं चाहता





था। वह बालक अपनी जिद पर अटल रहकर घर न जाने का निश्चय कर वही दरबार में रहने लगा। व साईं लखीराम जी की खूब सेवा करने लगा। कुछ वर्षों तक साईं लखीरामजी की सेवा करने के बाद बालक देवनराम साईं देवनरामजी बने। देश विभाजन पश्चात साईं देवनराम जी अपने गुरुदेव साईं लखीरामजी के साथ भारत के कल्याण कँम्प के उल्हासनगर-५ में आकर बस गए। साईं देवनरामजी का सिंध से ही यह नियम था कि वे पहले अपने गुरुदेव को भोजन की थाली परोस कर दिया करते उसमें जो बच जाता हो उसे भोजन के साथ-साथ खाया करते थे। साईं देवनरामजी शांत शांत व कम बोला करते थे। साईं जीवण रामजी (जीवणघोट) के ब्रह्मलीन होने के पश्चात सन्:१९७५ में साईं देवनरामजी को गादी पर विराजमान किया गया। गादी पर विराजमान होने के पश्चात भी वह उनकी सादगी कायम थी। साईं देवनरामजी के पास उन दिनों कई सवाली आया करते थे। स्वामीजी सभी से कहते थे अंदर अखंड ज्योत जल रही है, उस पर माथा टेक धूनी लेकर जाओ जो भी दु:ख है सबका निवारण होगा। साईं सेऊराम व साईं हरचूराम जरुर तुम्हारा भला करेंगे। उन दिनों श्री परसोमल संगतमल शाहापर से ही थल्ले की दरबार में सेवा किया करते थे। सवालियों को धूनी देते जिससे श्रद्धालुओं के दु:ख दूर होते थे। यही कारण था साईं जीवण घोट व साईं देवनराम उन्हें खुब प्यार करते थे। एक दिन परसोमल किसी काम से अहमदाबाद गये। वहां पे साईकल चलाने वाले ने लापरवाही से साइकल उसे ठोक दी वह गिर गये। गिरने के कारण उनके घुटने में चोट आ गई। मालिश करवाने व दवाईयां लेने के पश्चात भी वे ठीक नहीं हुए। परसोमल को याद आया २ दिन बाद साईं हरचूराम जी की वर्सी है। और मैं पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हूं। मन ही मन वे देवनराम साईंजी को प्रार्थना करने लगे कि मुझ गरीब पर दयादृष्टी कीजिए। मैं ठीक हो जाऊं। साईं देवनरामजी ने स्वप्न में आकर परसोमल को प्यार से हाथ घुमाकर अंतरध्यान हो गए। सुबह जब परसोमल नींद से उठे तो दर्द कम हो गया। और वह चलने लगे उसी दिन वह अहमदाबाद से उल्हासनगर की ओर निकले। वर्सी के मौके पर आ पहुंचे, वे सीधे देवनरामजी के पास आकर खड़े हो गए। स्वामीजी उन्हें देखकर हंसने लगे। परसोमल ने कहा स्वामीजी आपकी बदौलत मैं यहाँ पहुंच पाया हूं। एक बार एक महिला को दरबार में लाया गया। उसे गुप्त बीमारी थी। कई जगहों पर ईलाज करवाने के पश्चात भी कुछ फर्क नही हुआ। साईं देवनरामजी उस



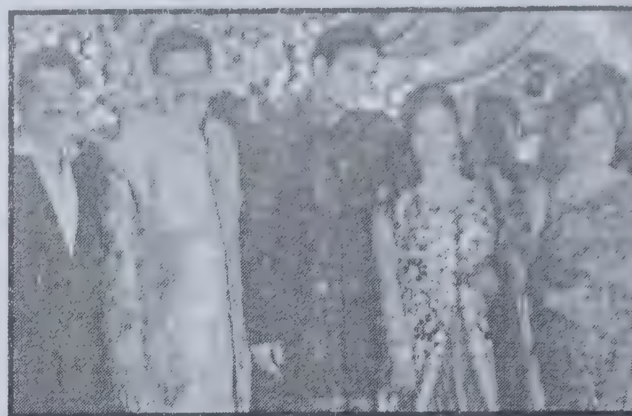


महिला को ठंडियों में ठंडी व गरमियों में गर्म चीजें खाने को कहा। उस महिला के घरवाले चिंतित हो गए कि ये कैसा ईलाज है। कुछ दिनों बाद महिला हँस्ती नाचती हुए दरबार में आई व साईंजी के चरणों में गिर पड़ी। एक बार एक व्यक्ती को अचानक पेट में दर्द बड़ गया। डॉक्टरों को यह तकलीफ समझ में नहीं आ रही थी। उसे थल्ले की दरबार में लाया गया। उस व्यक्ती की माताजी आखों में आंसू लिए साईंजी से विनंती करने लगी कि इस पर कृपा करो यह बालक जल्द स्वस्थ हो जाए। साईंजी ने कहा यह बालक जल्द स्वस्थ हा जाएगा। केवल इसे दरबार में सेवा करने आना पड़ेगा। कुछ दिनों तक वह व्यक्ती सेवा करता रहा वह व्यक्ती पूरी तरह से स्वस्थ हो गया। इसी प्रकार कई सवालियों के दु:खों का निवारण करते-करते हजारों लोग दरबार में आने लगे। स्वामीजी द्वारा किये गए अनगिनत चमत्कारों का बयाँ कभी नहीं किया जा सकता।

'माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)' एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका 'जीवन तरंग' ऐसे संतो महात्माओं एवं पीर पैंगबरों को शत् शत् नमन करते है ।

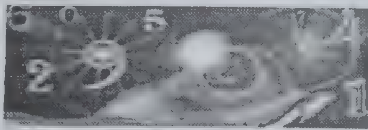
बोलो थल्ले वारे साईं देवनराम साहेब की जय....

"सालगृह की शुभकामनाएं"

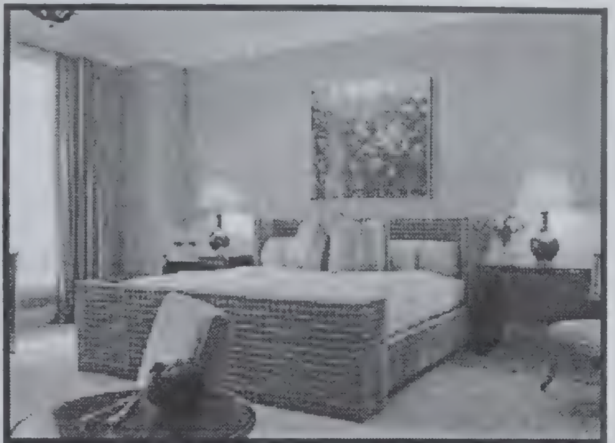


उल्हासनगर के लाडले आमदार श्री कुमार उत्तमचंद आयलानी एवं उनकी अर्धांगिनी व नवनिर्वाचित नगरसेविका श्रीमती मीना कुमार आयलानी जी को सोमवार दि: २०-२-१२ को महाशिवरात्री के पावन अवसर पर संपूर्ण शहरवासियों न अपने लाडले आमदार को शुभकामनाएं दी। जहां न सिर्फ शहर भर से बल्कि देश-विदेश से भी फोन द्वारा एस.एम.एस,मेल द्वारा शिव भक्त भाभी मीना व श्री कुमार आयलानी जी को शुभकामनाएं मिलीं। तथा उनके समर्थकों, नगरसेवकों, पदाधिकारीयों, कार्यकर्ताओं व सीनिअर सिटीजन के सभी सदस्यों व कई सामाजिक संस्थाओं ने अपने प्यारे आमदार के प्रति प्यार जताते हुए थादल-वादल(ठंढाई) व प्रसाद का वितरण किया। वहीं स्थानीय अखबारों व टी.व्ही चैनलों के माध्यम से शहर के कई दिग्गज हस्तियों ने हार्दिक शुभ कामनाएं दीं। "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि)" व "जीवन तरंग" परिवार के तरफ से भी श्री व श्रीमती मीना कुमार आयलानी जी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं एवं उनके मंगलमय जीवन हेतु भगवान भोलेनाथ से यही प्रार्थना करते हैं कि यह जोड़ी हमेशा चमकती रहे, खुशहाल रहे, क्योंकि उन्होंने माता रुकमणीजी के दरबार पर यही आशीर्वाद मांगा है।

वास्तुशास्त्र का ज्ञान



बैडरूम का रखें खास ख्याल



● शयान कक्ष घर में स्थित एक ऐसा स्थान है, जहां पर हम अपने जीवन का लगभग तिहाई हिस्सा व्यतीत करते हैं। पूरे घर में इस कक्ष का अपना अलग महत्व है। इसके महत्व के कारण ही वास्तु शास्त्रों में भी इसके बारे में विशेष बातें कही गई हैं। दिन भर की थकान और मानसिक परेशानियों से निपटकर हम इसी कक्ष से ताजगी लेकर निकलते हैं। इसलिए इस स्थान का वास्तु–संगत होना बेहद जरुरी है।

वायव्य कोण (उत्तर–पश्चिम) में शयनकक्ष का होना अशुभ होता है। यह क्षेत्र अस्थिरता का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में शयनकक्ष होने से जहां दांपत्य जीवन अस्तव्यस्त होता है, वहीं व्यावसायिक दृष्टि से भी गिरावट आती है।

● वर्गाकार तथा आयताकार शयनकक्ष उत्तम होता है। आसमान आकार का, अंग्रेजी अक्षर 'एल' के आकार का अथवा गोलाकार शयनकक्ष अशुभ होता है। शयन कक्ष में मंदिर की स्थापना कदापि ना करें।

● अगर आपका पलंग चरमराता है, तो उसे फौरन ठीक करवाएं। यह शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथसाथ दांपत्य जीवन के लिए अशुभ फल देगा।

● शयन कक्ष का प्रवेश द्वार पलंग के एकदम सामने नहीं होना चाहिए।

● पलंग के नीचे कूड़ा–कर्कट, जूते व अन्य फालतू सामान न रखें।

● अगर दांपत्य जीवन में मतभेद रहते हों तो पलंग पर दो मैट्रेस की जगह इकहरा (सिंगल)मैट्रेस बिछाएं।

● पलंग को शहतीर, गार्डर अथवा बीम के नीचे न लगाएं। बीम के नीचे शयन करने से जहां अनिद्रा व मानसिक परेशानी पैदा होगी वहीं वैवाहिक जीवन में यह तनाव का भी कारण बनता है।

● वैसे तो शयन कक्ष में प्रतिबिंब पैदा करने वाले साजो सामान को शुभ नहीं माना जाता। परंतु अगर शयनकक्ष से दर्पण, टैलीविजन आदि को हटाना मुमकिन न हो तो रात को उन्हें ढंककर सोएं। शयनकक्ष में जंगली व क्रूर जानवरों तथा दुख की अभिव्यक्ति करने वाले चित्र न लगाएं।

● वैवाहिक जीवन के आनंदमय क्षणों की याद ताजा करने वाले चित्र नैऋत्य कोण (दक्षिण–पश्चिम) में लगाएं। अगर आप बॉक्स का उपयोग करते हैं तो इसके भीतर रखे गए सामान को व्यवस्थित करते रहें। टूटा फुटा सामान बॉक्स बैड में न रखें।

व्यक्तित्व आफ द मन्थ "श्री गीतकार गोविंदा"



आज हम बात कर रहे हैं एक ऐसे समाज सेवी की, जिन्होंने न सिर्फ लेखन की दुनिया में अपना नाम रोशन किया बल्कि सिंधी समूदाय का भी नाम रोशन कर एक नयो मिसाल कायम की है। हाँ, हम बात कर रहे हैं, गीत लेखन की दुनिया में प्रख्यात गीतकार गोविंदाजी अर्थात गोविंदा नारायणदास रेलवानी जी जिनका जन्म सन्: ०२-०९-१९६० के दिन उल्हासनगर-१ के सज्जन परिवार में हुआ. उनकी माताजी का नाम इंद्राबाई था, गीतकार गोविंदाजी को चार भाई व ३ बहनें हैं, बचपन से ही उनका गीत लेखन के प्रति अधिक झुकाव था. वे पढ़ाई के साथ-साथ घंटो गीत लेखन का अभ्यास किया करते. सन् १९७५ में उन्होंने मैटिक तक पढ़ाई पूरी की. तत्पश्चात उल्हासनगर-४ स्थित व्यवसाय में व्यस्त हो गए लेकिन साथ ही साथ अंदर के कलाकार की चाह को जारी रखा। धीरे-धीरे उनका लगाव लेखन के प्रति बड़ने लगा और वे नए-नए गीतों को लिखने लगे. गीतकार गोविंदा सही मायनों में हिंदुस्तानी हैं. क्योंकि असल में वे अपनी मातृ-भाषा सिंधी के साथ-साथ, हिंदी, मराठी गीत भी लिखने लगे व गीतकार गोविंदा द्वारा लिखे गए गीत कुछ इस प्रकार हैं (१) दुपेश वाराची प्रार्थना [(मराठी गीत) (२) ज्योतिन वारा लाल उदेरा [सिन्धी गीत] (३) जिये जिये हमारा (पप्पू) कालानी [हिंदी] (४) जिये जिये (पप्पू) [सिन्धी गीत] (५) जिये साईं बलराम [सिन्धी गीत] (६) जगदम्बा नाचे [हिंदी] व अन्य ऐसे कई मन मोहक गीत जो श्री गोविंदा जी द्वारा लिखित हैं जिये जिये.........(पप्पू) कालानी यह गीत आज भी न सिर्फ उल्हासनगर बल्कि आस पास के शहरों के बच्चों के मुख पर भी छाया हुआ है. व अन्य ऐसे कई सिंधी, हिंदी एवं मराठी भक्ती गीत हैं जो लोगों के दिलों-दिमाग में बसे हुए हैं। सिंधी भाषा को बढ़ावा देने हेतु व लोक कल्याण हेतु उन्होंने कई किताब भी लिखे हैं जैसे कि (१) "हर आह में आया माँ।" [सिन्धी गीत] (२) साकी शराब आने दे [हिंदी] (३) दुनिया खेल तमाशा. व अन्य पुस्तकें जो लोगों के दिलो-दिमाग में बस गई हैं व उनके जीवन में कारगर साबित हुई हैं।

जिन्हें लोग बड़े उत्साह से पढ़ते हैं. वे कई बार सन्मानित भी किए जा चुके है

हाल ही में दि: २९-२-१२ की शाम "सिन्धू युथ सर्कल" की ओर से श्री गोविंदा जी को हार, दुशाले, ट्राफी



देकर सन्मानित भी किया गया. युथ सर्कल के जनरल सेक्रेटरी श्री सुंदर डगवानी जी ने गोविंदाजी को प्रशंसा में अधिक शब्द कुछ इस प्रकार व्यक्त किये कि गोविंदाजी जो कुछ भी देखते हैं उसे नजर बंद कर, एक अलग ही शायराने अंदाज में पेश करते हैं जिससे लोग हर्षित हो जाते हैं। गीत के अलावा वे कई समाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं जैसे कि उल्हासनगर-१ स्थित "राम जपो आश्रम" में वे वृद्धों की सेवा भी हर रोज निस्वार्थ करते हैं व उसे ही अपनी सच्ची कमाई मानते हैं। उनके इसी गुण के कारण वे आज सफल बन पाये हैं। जैसे सूर्य देव का चरित्र अपने आप में महान होता है। सूर्य अपने आप में संसार से अंधेरे का नाश कर प्रकाश की स्थापना करता है, उसी प्रकार श्री गोविंदा जी संगीत के माध्यम से प्रेम, मानवता, सेवा, धर्म, दया, क्षमा, शांति की मशाल जलाते हैं।

मराठी गीतों को उसी मिठास और सुरताल और मिठास से लिखते हैं, उनके गीत सुनने वालों के हृदय को स्पर्श करते हैं। इन्हीं गीतकार गोविंदा ने बृह्मलीन माता रुकमणी देवी जी के विचारों, जीवनी व उनके द्वारा समाज के हित में किए गये अमुल्य कार्यों को कलम बंद कर एक अजर अमर गीत की भी रचना की जिसके बोल हैं: "सुबह सुबह जब नींद से जागो, नाम सिमरन किया करो। माताजी रुकमणी देवी कहे सबका तुम भला करो।।" जिसे जल्द ही मधुर संगीत व अच्छे गायक के साथ आपके सामने प्रस्तुत किया जायेगा। उल्हासनगर शहर के महानायक एवं पूर्व विधायक श्री सुरेश(पप्पू) कालानी जी के लिये लिखा गया गीत उल्हासनगर के बच्चे-बच्चे के जुबान पर सिर चढ़के बोलता है इस गीत ने इतिहास रच दिया है और इस इतिहास पर संपूर्ण उल्हासनगर शहर को गर्व है जो गीतकार गोविंदा की कलम से लिखा गया है।

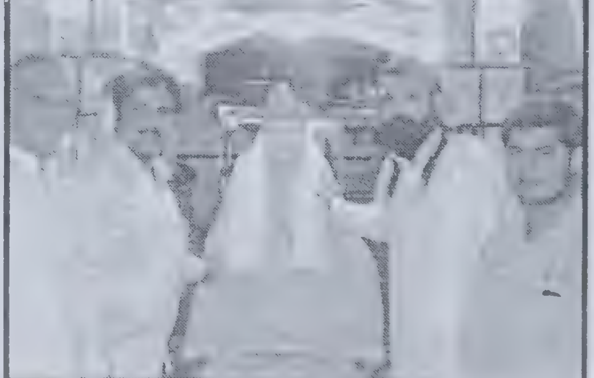
ऐसे महान गीतकार गोविंदाजी जिन पर संपूर्ण सिंधी समुदाय को गर्व है कि उल्लेखनीय और एतिहासिक गीत लेखन की यात्रा को देखते हुए माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था द्वारा दि: ३०-१०-११ के उध्यापन दिवस के दिन उन्हें वार्षिक संस्था के वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में सैंकड़ों लोगों की उपस्थिती एवं टेलीविजन के सीधे प्रसारण में गीतकार गोविंदाजी को हार, शाल व स्मृतीचिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मंद मंद मुस्कान, मिलनसार व सादगी प्रिय स्वभाव के गोविंदाजी अपनी उपस्थिती मात्र से लोगों का मन जीत लेते हैं। ऐसे महान गीतकार एवं लेखक गोविंदाजी के भविष्य की स्वर्णमय यात्रा के लिए "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि.)" व मासिक पत्रिका "जीवन तरंग" की तरफ से हार्दिक-हार्दिक शुभकामनाएँ।

"कर्मयोगी संत बाबा मंगतराम साहब का वर्सी उत्सव धूम धाम से संपन्न"



हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कर्मयोगी संत बाबा मंगतराम साहेबजी का ४९वां वरसी उत्सव पूज्य बाबा मंगतराम दरबार में मंगलवार दि:- ७-२-२०१२ से शुक्रवार १०-२-१०१२ तक बड़े ही धूम धाम व हर्षो उल्लास के साथ हिंदू सनातन संस्कृति अनुसार गादीनशीन साईं मनीषलाल जी के अध्यक्षता में बाबा मंगतराम दरबार, टाऊन हॉल के सामने, उल्हासनगर ३ में मनाया गया. इस कार्यक्रम में शहर भर से कई साधू संत, सुप्रसिद्ध हस्तियां उपस्थित थीं. जिनमें संत: स्वामी देवप्रकाश महाराजजी (स्वामी शांतीप्रकाश आश्रम), साईं रुपारामजी (साईं हरचूराम दरबार), साईं परमानंद साहेब (साईं वसण शाह दरबार), साईं बलराम साहेब (साईं धर्मदास दरबार), भाभी कविता लक्ष्मण राज सीरवानी(गुरु गुलराज कुटीया), भाऊ लीलाराम साहेब(झूलेलाल मंदिर) व अन्य संतगण व शहर की दिग्गज हस्तियां उपस्थित थीं । चारों दिन बाबा मंगतराम साहेब दरबार में खुशी की लहर छायी हुई थी. इस कार्यक्रम का शुभ आरंभ कुछ इस प्रकार कीया गया. दि : ७-२-१२ मंगलवार की सुबह ९.०० बजे हवन(यज्ञ) व श्री सत्यनारायण पूजा, कथा, कीर्तन, ५.०० बजे पूज्य दरबार साहेब से बाबाजी की सवारी और नगर कीर्तन, बहराणा साहेब. दि: ८-२-१२ के दिन सुबह ७.०० प्रभात फेरी, ध्वजारीहड़, अखंड पाठसाहेब.

दि: ९-२-१२ व १०-२-२०१२ के दिन सुबह ८.०० बजे आरती, व अन्य धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन कीया गया था. दि: ११-२-१२ के दिन पल्लव पहनकर, भोग साहेब पहनकर कार्यक्रम की पूर्णावृती की गई. वर्सी के दिन चारों दिन दरबार साहिब में काफी मौज मची हुई थी. जहां हर रोज नितनीयम सुबह-शाम भजन, कीर्तन, आरती का आयोजन किया गया था. जहां गादीनशीन साईं मनीष लालजी, श्री दीपक शर्मा (नेहा म्युजिकल ग्रुप), व अन्य भक्तों द्वारा बाबा मंगतराम जी की समृती में मधुर व दिल को छू जाने वाले भजनों को सुन सभी भक्तगण हर्षित हो गए। चारों दिन दरबार साहिब में भंडारे(भोजन) की व्यवस्था की गई थी. मां अन्नपूर्णा की कृपा से सभी भक्तगण भोजन गृहण कर तृप्त हो गए.





इस पावन अवसर पर दरबार को बड़े ही शानदार तरीके से सजाया गया था। जिसकी सभी भक्तगणों ने तहे दिल से प्रशंसा की. इस कार्यक्रम में भक्तगणों की सेवा हेतु श्री व श्रीमती प्रदिप खत्री, प्रो. तेजुजा प्रेमी व अन्य कई सेवाधारी भी उपस्थित थे. जिन्होंने निस्वार्थ भाव से सेवा कर अपना जीवन सार्थक कीया. शहर से बाहर से आए हुए भक्तों के विश्राम की व्यवस्था दरबार में ही की गई थी. अंत में (पल्लव) के समय सभी भक्तों ने अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की कामना बाबाजी के समक्ष रख बाबाजी का असीम आशीर्वाद प्राप्त कीया. यह चार दिवसीय कार्यक्रम बड़े ही धूम धाम से संपन्न हुआ, जिसमें सभी संत, महात्माओं, ज्ञानी, विदवानों, पंडित, गीत्तकार, कलाकार, शायर, फनकारों ने पूज्य बाबाजी मंगतराम साहिब कुटिया पर हाजरी देकर संपूर्ण महौल खुशहाल बना दिया. इस स्वर्ण अवसर पर "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि.)" व "जीवन तरंग" आध्यात्मिक मासिक पत्रिका के सभी सदस्य उपस्थित थे. जिन में प्रधान संपादक श्री दीपक.एम.रोहरा समाज सेवक विजय राहाणे, श्री अविनाश(ओम)वलेचा, श्री जय नाथानी व अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे. जिन्होंने वर्सी महोत्सव का लाभ दिल से लिया व बाबा मंगतराम साहेब व साईं मनिपलालजी का आशिष प्राप्त कर अपना जीवन सफल बनाया.

इस महिने के त्यौहार, पर्व व व्रत

मार्च २०१२

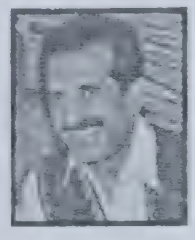
रवि	०४	अमालकी एकादशी
सोम	०५	गोविंद द्वादशी
मंगल	०६	भौम प्रदोष
बुध	०७	पूर्णिमा, सत्यनारायण, होलिका दहन
गुरु	०८	धूलिवंदन, धूरियो
शनि	१०	छ. शिवाजी जयंती (तिथिनुसार)
रवि	११	गणेश चतुर्थी
सोम	१२	रंग पंचमी
बुध	१४	शीतला सप्तमी
गुरु	१५	विश्व ग्राहक दिवस
शनि	१७	विश्व विकलांग दिवस
रवि	१८	पाप मोचनी एकादशी
मंगल	२०	रंग तेरस
गुरु	२२	अमावस्या, संबत वर्ष पूर्ति
शुक्र	२३	चैत्री नववर्ष प्रारंभ, नवरात्रि, गुडी पाडवा
शनि	२४	चेटीचंड, झूलेलाल जयंती
शनि	३१	दुर्गा अष्टमी

श्री. महेंद्र शर्मा
(महाराज)
मो. नं.
09322777947



"जीवन तरंग" के सन्मानिय सदस्यों को

जन्मदिन की बधाई तथा शुभकामनाएँ



श्री. संतकुमार एन. बलेचा

२४/३/१२



श्री. नरेश मटाई

०२/३/१२



श्री. राजेश टेकचंदानी

२८/३/१२



श्री. प्रीतम कुकरेजा

२५/३/१२



श्री. अमृत बठिजा

१२/३/१२



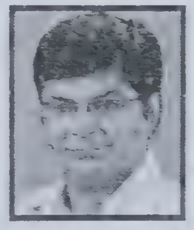
श्री. प्रविन किशनानी

१२/३/१२



श्री. जेठो चंदवानी

०६/३/१२



श्री.सुशील पंजाबी

१८/३/१२



श्री. अविनाश राजु बलेचा

०९/३/१२



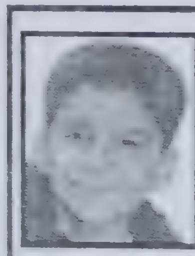
श्री. यश रोहरा

२८/३/१२



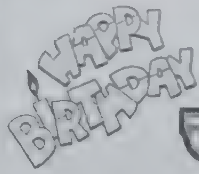
कु. पुजा गुप्ता

१५/३/१२



श्री. यश रोहरा

२९/३/१२



"जीवन तरंग" के सन्मानिय सदस्यों को

जन्मदिन की बधाई तथा शुभकामनाएँ



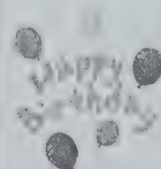



श्री.आसूदोमल मोहनानी
१४ मार्च

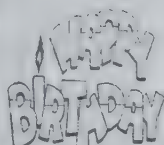




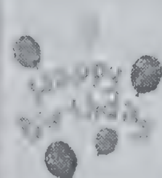
श्री.दुर्गेश थावानी
२१ मार्च




श्री. साहिबराव दौलतानी
१३ मार्च

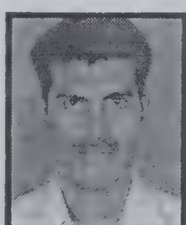
श्री. संजय शिवनानी
२० मार्च

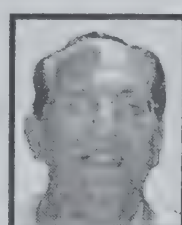
श्री. गौतम टेकवानी
२ मार्च




श्री वाल्मिक पठाईत(भंडया)
१३ मार्च

श्री. उध्दव अडवानी
३ मार्च

प्रो. शेवो बोधवानी
१२ मार्च



श्री. मुर्ली रोहरा
१ मार्च



श्री.ठाकुरदास चांडवानी
२७ मार्च

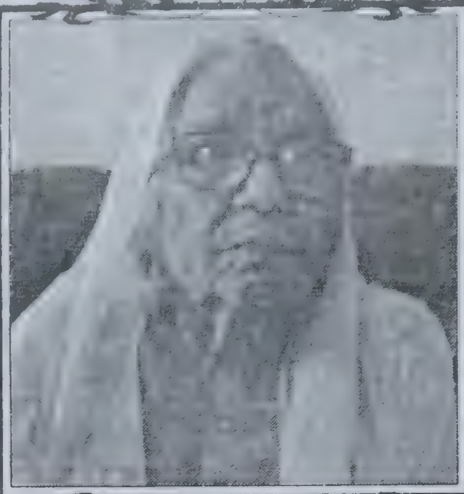


श्री.रामनाथ मोते सर (MLC)
१ मार्च



प्रिंसीपल घनशाम आहूजा
१ मार्च

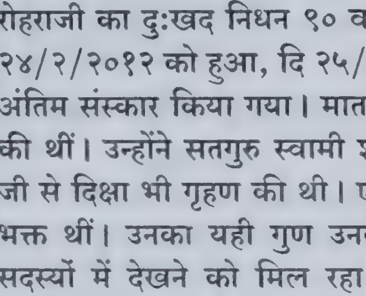
श्रध्दांजली





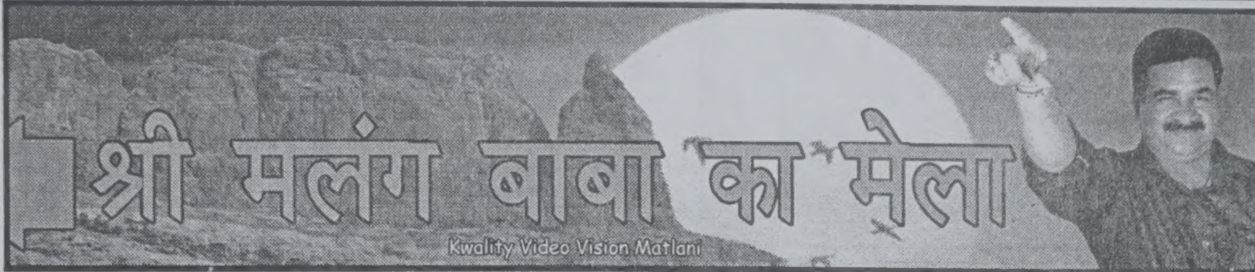
माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि) के संस्थापक दादा मेंघराजमल रोहराजी की मां तुल्य चाचोजी तथा दादा पिंजोमल रोहरा व जेठानंद रोहराजी की माताजी श्रीमती रामी बाई ठाकूमल रोहराजी का दुःखद निधन ९० वर्ष की आयु में दि : २४/२/२०१२ को हुआ, दि २५/२/२०१२ को उनका अंतिम संस्कार किया गया। माताजी धार्मिक प्रवृत्ति की थीं। उन्होंने सतगुरु स्वामी शांतीप्रकाश महाराज जी से दिक्षा भी गृहण की थी। एवं शिवजी की परम भक्त थीं। उनका यही गुण उनके सभी परिवार के सदस्यों में देखने को मिल रहा हैं। दि : २६/२/२०१२ को जिनकी पगड़ी रस्म पूज्य झूलेलाल मंदिर के हॉल में रखी गई। जहां शहर के असंख्य गणमानीयों ने माताजी को श्रद्धांजली अर्पित की। माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि) एवं जीवन तरंग आध्यात्मिक मासिक पत्रिका के संपूर्ण परिवार के तरफ से संपूर्ण रोहरा परिवार को ऐसे दुःखद समय में उन्हें दुख सहन करने की शक्ती प्रदान करे ऐसी प्रभू से हम प्रार्थना करते हैं।

उल्हासनगर महानगरपालिका के पूर्व नगरसेवक व सभागृह नेता श्री किशोर नारायणदास वनवारी जी की माताजी मीरादेवी नारायणदास वनवारीजी का दुःखद निधन दिः-१६-०२-२०१२ को हुआ। माताजी मीरादेवी धार्मिक, दयावान व सादगी की मूरत थी. उनसे मिलने पर उनका मिलनसार स्वभाव परायों को अपना बना लेता था. उनका यही गुण उनके सुपुत्र श्री किशोर वनवारी जी में देखने को मिल रहा है। माता मीरा बाई इनकी पगड़ी रस्म १८-२-१२ को शाम ५.०० बजे पुज्य चालीहा साहेब हॉल में रखी गई थी. जहाँ शहर की असंख्य हस्तियों ने माताजी को श्रृद्धांजलि अर्पित की. माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था (रजि) व जीवन तरंग परिवार की ओर से श्री किशोर वनवारीजी व उनके परिवार को ऐसे दुःखद समय में उन्हें दुख सहन करने की शक्ती प्रदान करें. ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

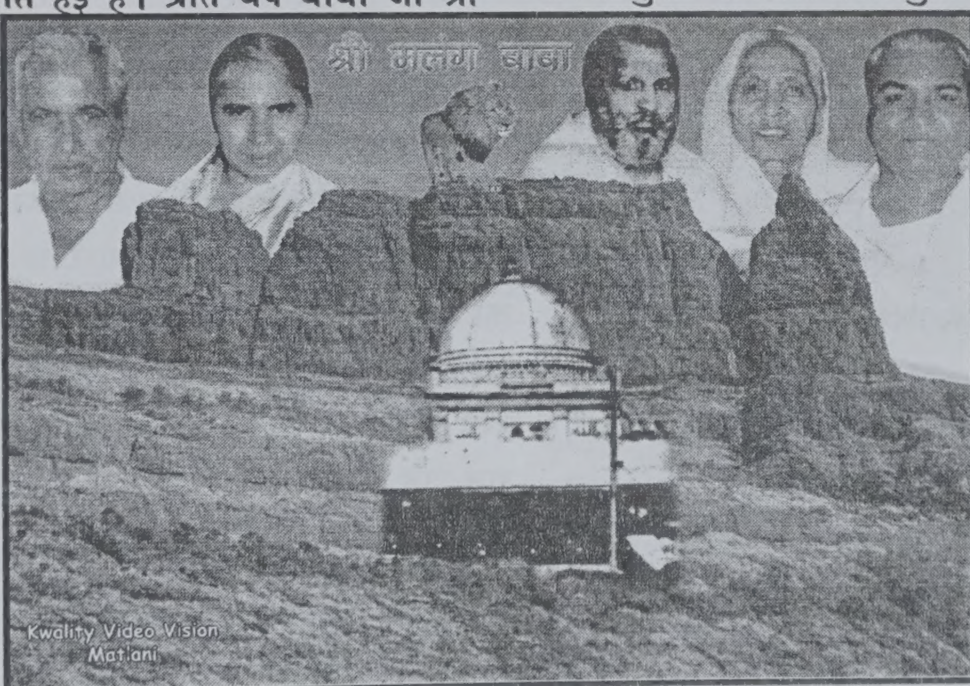


मुखी किशनचंद भाटिया जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवी किशनचंद भाटिया जी का दुःखद निधन दिः २६/२/२०१२ को हुआ । माताजी सावित्रीदेवी धार्मिक, दयावान व सादगी की मुरत एवं सेवाधारी थीं । उनके यही सदगुण उनके सुपुत्रों श्री लखमीचंद भाटिया व नंदलाल भाटिया जी में देखने को मिल रहे है । माता सावित्रीदेवी इनकी पगडी रस्म दिः २८/२/१२ को शाम ५.०० बजे पुज्य झूलेलाल मंदिर , उल्हासनगर -२ में रखी गई थी । जहां असंख्य लोगों ने माताजी को श्रृध्दांजली अर्पित की । "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि)" व "जीवन तरंग" परिवार की ओर से संपूर्ण भाटिया परिवार को ऐसे दुःखद समय मे उन्हें दुख सहन करने की शक्ती प्रदान करें । ऐसी ईश्वर से प्रार्थना करते हैं ।

"मलंग बाबाजी का भव्य मेला धूम धाम से संपन्न"



उल्हासनगर : सोमवार दि: ६-२-१२ की शाम, बॅरेक नं १८९३, सेक्शन-४०, ओटी सेक्शन के पास उल्हासनगर-५ में श्री सुनील दुसेजा जी की अध्यक्षता में बड़े ही धूम धाम व हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया. श्री मलंग बाबा के संदल की यह विरासत श्री सुनील दुसेजा जी को अपने पूर्वज बाबा जीवतमल भगवानदास मीरवानी जी से प्राप्त हुई है। प्रति वर्ष बाबा जी श्री मलंग की संदल सेवा में जाया करते थे। ३८ वर्ष पूर्व उनके घुटनों के दर्द की वजह से वे दुर्गम पहाड़ी नहीं चढ़ पाए. तब भगवान खुद अपने भक्त से मिलने चले आए मलंग सरकार ने उनके स्वप्न में आकर उन्हें दृष्टांत दीया और यहीं इसी स्थान पर मेलां मनाने की अनुमती दी. मान्यता है कि जो लोग श्री



मलंग बाबा की दुर्गम पहाड़ियों पर किसी कारणवश नहीं पहुंच सकते वे यहां दर्शन कर अपनी सारी मन्नतें पूरी कर श्री मलंग बाबाजी का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं इस कार्यक्रम का शुभारंभ भाऊ लीलारामजी (झूलेलाल मंदिर वाले) द्वारा सुंदर बहराना साहिब रख की गई. तत्पश्चात ७.०० से ९.०० बजे तक कव्वाल रफीक शैलार द्वारा मन को छू जाने वाली सुफी कवालीयां प्रस्तुत की हुईं रात ९.०० से ११.०० बजे तक लच्छू चावला व संजू भगत म्यूजिकल पार्टी द्वारा मधुर भजन गाये गये. जिसे सुन सभी भक्तगण झूम उठे. इस पावन अवसर पर कई संत, साधू, महात्मा व शहर क गणमान्य उपस्थित थ. संतगण जिन में भाऊ लीलाराम (झूलेलाल मंदिर वाले), वसणशाह दरबार के शहजादे साईं ओमी राम साहेब जी ने



आए हुए सभी भक्तों को अपने मधुर भजनों द्वारा झुमा दिया, बाबा डॉ. गुरसहानी(मलंग गड़ वाले), भाईसाहेब साजनदासजी व अन्य, कई भक्तगण उपस्थित थे. जिन्होंने इस पावन अवसर पर बाबाजी के दरबार में हाजरी देकर अपना जीवन सफल बनाया. यह देख मानो ऐसा लग रहा था कि भक्त गण मलंग गड़ स्थित दरगाह में पहुंच गये हों. साथ ही साथ माँ शेरांवाली, भगवान भोलेनाथ व अन्य देवी देवताओं की प्रतिमाओं को सुंदर तरीके से सजाया गया था जिसे देख सभी भक्तगण हर्षित हो हए. सभी भक्तों की सेवा हेतु कई सेवाधारी उपस्थित थे. जिनमें श्री.मनीष दुसेजाजी, श्री. मोहित दुसेजाजी, श्री. नितिन लुद्रानीजी, श्री.सायल लुद्रानीजी, श्री.प्रदीप वाधवानीजी, श्री.धनराज वनवारीजी, श्री.अखिल मोटवानीजी, श्री.रोहित मोटवानीजी, श्री.हुंदराज धामेजाजी, श्री.बाबू नागपालजी व अन्यों ने अपनी सेवा की जिम्मेदारी के साथ निभाते सभी का मन मोह लिया. तत्पश्चात उपस्थित भक्तों हेतु प्रसाद रुप में भंडारे(भोजन) की व्यवस्था भी की गई थी जिसे खाकर सभी भक्तगण तृप्त हो गए. तत्पश्चात सभी भक्तगणों ने एकत्र होकर अपनी-अपनी मन्नत की पूर्ति की कामना श्री बाबा मलंग के समक्ष की. इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जग्गू मूव्हीज व कोनॉर्क यू.एस.ए. डेन केबल नेट के माध्यम से शहर के घर घर व आस पास के अंबरनाथ, कल्याण में दिखाया गया. इस स्वर्णीय आध्यात्मिक अवसर पर "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि.)" व "जीवन तरंग" मासिक पत्रिका के सभी सदस्य मेले में उपस्थित थे जिनमें संस्था गादीनशीन हीर दीपक रोहरा, यश रोहरा, करिशमा रोहरा, जीवन तरंग के प्रधान संपादक श्री दीपक एम रोहरा, श्री विजय राहाणे, जय नाथानी, अविनाश(ओम) वलेचा व अन्य सदस्य उपस्थित थे जिन्होंने श्री मलंग बाबा व संतों के आशीर्वाद प्राप्त कर अपना जीवन धन्य किया. यह कार्यक्रम समारोह सफलतापूर्वक व शानदार तरीके से मनाया गया. रात १२ बजे श्री मलंग बाबा के संदल में सभी भक्तों के मंगलमय जीवन की कामना बाबा मलंग जी के समक्ष रख इस कार्यक्रम की पूर्णावती की गई.

धन्य हे ऐसे सुपुत्र जो अपने पूर्वजों की परंपराको कायम रखते हुए ऐसे भव्य मेले का आयोजन करते है । हम "माता रुकमणी देवी सामाजिक संस्था(रजि.)" व "जीवन तरंग" परिवार की तरफ से ऐसे सुपुत्रों को शत् शत् प्रणाम करते है ।



चेटी चंड महोत्सव व बापू के आगमन पे जल प्रसादी सेवा

